॥ ओ३म् ॥

RNI/MPHIN/2009-28723
डाक पंजीयन संख्या MP/IDC/1533/2017-2019

वैदिक राष्ट्र

वयं राष्ट्रे जागृयामः

वेद, वैदिक साहित्य, आध्यात्मिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय अनुसंधानात्मक मासिक पत्रिका

वर्ष – 10, अंक –02 | इन्दौर, जून 2018 | मूल्य 30 रुपए

महाराणा प्रताप
478वीं जयंती

रानी दुर्गावती
पुण्यतिथि : 24.06.1564

वीर-वीरांगनाओं
को
शत् शत् नमन ...

महारानी लक्ष्मी बाई
पुण्यतिथि : 18.06.1858

डॉ. आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार
(संपादक – वैदिक राष्ट्र मासिक पत्रिका)

ओ३म्

आर्य समाज के इतिहास में पहली बार

अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेल

दिनांक – 6, 7 व 8 जुलाई, 2018

स्थान : गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार (विद्यालय विभाग के प्रांगण में)

आप सभी से प्रार्थना है कि भारी संख्या में पधारकर तन-मन-धन से सहयोग करें।

निवेदक

डॉ. आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार

अध्यक्ष, गुरु विरजानंद गुरुकुल इन्दौर, अध्यक्ष, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् म.प्र.,
अध्यक्ष, अखिल भारतीय आर्य युवक परिषद् म.प्र., संपादक– वैदिक राष्ट्र मासिक पत्रिका

आयोजक एवं संयोजक – सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

'महर्षि दयानंद भवन' 3/5 आसफ अली रोड़, नई दिल्ली – 110002

दूरभाष : 011-23274771, 23260985, ई–मेल : sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in

॥ ओ३म्॥

गुरु विरजानंद गुरुकुल

वैदिक संस्कृति, वेद, यज्ञ, योग के प्रचार – प्रसार हेतु

गुरु विरजानंद गुरुकुल इन्दौर (म.प्र.)

के सहयोगार्थ तन–मन धन से सहयोग करके पुण्य के भागी बनें।

नोट :- गुरुकुल में पुस्तक, वस्त्र एवं भोजन आदि सामग्री देने हेतु एवं मासिक सदस्य-वार्षिक सदस्य बनने हेतु संपर्क करें।

संपर्क करें :

कार्यालय : आर्य समाज – 219, संचार नगर एक्स, इन्दौर (म.प्र.) 452016

ई-मेल : aryasamajindore@yahoo.com, वेबसाइट : www.vedicparinaya.com

www.indorearyasamaj.com www.aryasamj.co 9977 95 7777, 9977 98 7777 0731-6066067

॥ ओ३म् ॥

RNI/MPHIN/2009-28723
डाक पंजीयन संख्या।
MP/IDC/1533/2017-2019

वैदिक राष्ट्र

वेद, वैदिक साहित्य, आध्यात्मिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय अनुसंधानात्मक मासिक पत्रिका

संपादक – आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार

E-mail: aacharyabhanu@yahoo.com

वर्ष–10 अंक–02 जून 2018

❖ कार्यकारी संपादक ❖
राजवीर सिंह (झारखंड)
❖ सहसंपादक ❖
संदीप शजर (दिल्ली)
❖ प्रबंध संपादक ❖
गायत्री सोलंकी, (इन्दौर, म.प्र.)
प्रणवीर शास्त्री (बुलंदशहर, उ.प्र.)
पवन शास्त्री (खण्डवा, म.प्र.)
❖ संपादक मंडल❖
अमरसिंह वाचस्पति (ब्यावर, राजस्थान)
डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार (हरिद्वार, उत्तराखंड)
श्रीमती मनीषा (शांति) विद्यालंकार (म.प्र.)
योगाचार्य उमाशंकर (सूरत, गुजरात)।
रमेशचंद्र विद्यार्थी (हमीरपुर, उ.प्र.)
वीरेन्द्र सरदाना (दिल्ली)
सुखबीर शास्त्री (मुम्बई)
सत्यवीर (हरियाणा)
रामकृष्ण सहस्त्रबुद्धे, नासिक (महा.)
सुश्री सौम्या मिश्रा (बाराबंकी, उ.प्र.)
श्री नवीन तिवारी 'अथर्व' (छ.ग.)
श्रीमती दीपा संजय 'दीप' (उ.प्र.)
नोट :– सभी पद अवैतनिक हैं।

अनुक्रमणिका

संपादकीय	–	02
वेदाऽमृतम्	–	03
महाराणा प्रताप की गौरवगाथा	–	04
भारतीय वीरांगना रानी लक्ष्मी बाई	–	05–06
रानी दुर्गावती	–	07
जन्म व पुनर्जन्म का आधार	–	08–10
महान बलिदानी–बंदा बैरागी	–	11–12
श्रीगुरु जी और बन्दा बहादुर का	–	13–14
धर्मरक्षक बिरसा मुंडा और	–	15–16
ईश्वर प्राप्ति ओर गुरु	–	17
अकबर की महानता का गुण्गान	–	18
यज्ञ	–	19
शास्त्रार्थों के मनोरंजक क्षण	–	20–21
एक बार एक कवि हलवाई की	–	22
वैदिक धर्म को यदि बचाना है	–	23–25
लक्ष्य	–	26–27
खाली पेट	–	28
निशा बिटिया	–	29–31
बच्चों को स्मरण करवाने योग्य	–	32

❖ मुख्य कार्यालय ❖
219, संचार नगर एक्स, कनाड़िया रोड़, इंदौर (म.प्र.) फोन: 0731-6066067, मो. 09977967777, 09977987777, 09202213410
Email: vaidikrashtra@yahoo.com, Website: www.vaidikrashtra.com

❖ दिल्ली कार्यालय ❖
संदीप शजर – एफ–5, विनायक अपार्टमेंट बुराड़ी (संतनगर) दिल्ली, मो. 09873534060

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार द्वारा आर.टेक ग्राफिक्स 864/9, नेहरु नगर, इन्दौर से मुद्रित एवं 219, संचार नगर एक्सटेंशन कनाड़िया रोड़, इन्दौर से प्रकाशित। आर.एन.आई. नं./एम.पी.एच.आई.एन / 2009-28723

'वैदिक राष्ट्र' में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक या प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। सभी विवादों की परिस्थिति में न्याय क्षेत्र ''इन्दौर न्यायालय'' ही रहेगा।

संपादकीय

वैदिक समाजवाद

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज के संचालन के लिए कुछ विशेष नियम होते है इनमें कुछ नियम देश-काल-परिस्थिति के अनुसार भिन्न-भिन्न हो सकते है किन्तु कुछ सार्वभौमिक - सार्वकालिक भी नियम समाज के संचालन के लिये होते है।

वैदिक समाजवाद का सिद्धांत सार्वभौमिक-सार्वकालिक है । वैदिक समाजवाद में मुख्य बिंदु:- 1. वर्ण व्यवस्था, 2. आश्रम व्यवस्था मुख्य है यदि वैदिक वर्ण व्यवस्था के अनुसार ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र का चयन गुरुकुल पद्धति (आचार्य-शिष्य के द्वारा) गुरुकुल पद्धति के अनुसार हो तो आरक्षण की समस्या, छूआ-छूत, बेरोजगारी, आर्थिक असमानता, पर्यावरण समस्या आदि अनेकों प्रकार की कुरीतियाँ-कुप्रथा दूर होकर दिव्य समाज का निर्माण हो सकता है। प्राचीनकाल में ऋषियों के द्वारा निर्मित वैदिक-संविधान ही वैदिक समाजवाद कहलाता है जिसको अपनाने से समाज के सभी वर्ग में निराप्रद रुप से सुखी थे।

आज का समाज दो भागों में बटा हुआ है 1. पूंजीपति वर्ग, 2. शोषित वर्ग, एक वर्ग के पास में अथाह धन है दूसरा वर्ग दैनिक अभावों से ग्रस्त है।

एक संत को उनके शिष्यों ने कहा महाराज आपने तो बहुत सी उपाधियाँ प्राप्त की हैं, जिससे आप कलेक्ट्रेट बन सकते थे प्रत्युत्तर संत ने शिष्यों से कहा जो व्यक्ति समाज में कलेक्ट (Collect=संग्रह) करता है वह हमेशा दुखी रहता है। उसे संग्रहणी का रोग लग जाता है। मैं तो डिस्ट्रीब्यूटर (Distributer=वितरक) हूँ परमात्मा ने मुझे जो दिया है वह वितरण कर रहा हूँ। कहने का आशय यह है कि वैदिक समाजवाद तीन ऋणों (मातृ ऋण, पितृ ऋण, आचार्य ऋण) को याद दिलाता है। जिससे व्यक्ति समाज के ऋण से उऋण होने का प्रयास करता है जो समाज ने उसे दिया उसे लौटाने का प्रयास करता है इसलिए वेद में कहा है- हे ! मनुष्य तो सौ हाथों से कमा और हजारों हाथों से लौटा।

इस प्रकार वैदिक समाजवाद एक दर्शन है, एक जीवन शैली जिसको अपनाने से समाज हमेशा सुखी रहा है और रहेगा।

आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार
ई-मेल: aacharyabhanu@yahoo.com
मो. 9977987777, 9977967777

वेदाऽमृतम्

सोमपान से अमरता

अपाम सोममृता अभूमागन्म ज्योतिरविदाम देवान्।
किं नूनमस्मान् कृणवदराति: किमु धूर्तिरमृत मर्त्यस्य ॥

-ऋ. 8।48।3

ऋषि:- **प्रगाथ: काण्व: ॥** देवता-**सोम: ॥** छन्द:- **विराट्त्रिष्टुप् ॥**

विनय– मैंने अमर करने वाले ज्ञानामृत का पान कर लिया है, मैं तृप्त हो गया हूँ, अमर हो गया हूँ। अब मैं मृत्यु से पार हो गया हूँ, क्योंकि मैंने देख लिया है कि मैं अजर-अमर हूँ, नित्य हूँ, सनातन हूँ, न कभी पैदा हुआ हूँ और न कभी मर सकता हूँ। यह सब मैं ज्ञान के प्रकाश में स्पष्ट देख रहा हूँ। मैं प्रकाश के राज्य में पहुँचा हुआ हूँ, देव हो गया हूँ, मैंने देवलोक पा लिया है। अब मेरा न कोई मित्र है और न शत्रु। मेरे लिए संसार में विन्घ-बाधा कोई वस्तु नहीं रही है। जो बेचारे अज्ञानी मुझे अपना शत्रु समझते हैं, मुझे सहायता देना रोककर हानि पहुँचाना चाहते हैं- वे जानते नहीं। उनके किये से भला मेरा क्या बिगड़ सकता है ? मुझ परितृप्त - निष्काम पुरुष को वे क्या हानि पहुँचा सकते हैं ? मुझ अमर को मरणशील मनुष्य की कौन-सी हिंसा, कौन- सा वध मार सकता है ? हे मेरे अमृत परमेश्वर ! वे अमृतपान को कुछ भी नहीं जानते। तू उन्हें भी अमृत का तनिक -सा आनंद चखा दे, तो वे जान जाएँ कि मरणशील मनुष्य कितना तुच्छ है और उसके हाथ में पकड़ा हुआ हिंसा का हथियार और भी अधिक क्षणभंगुर एवं तुच्छ है ! मनुष्य अपने मर्त्यपन की अवहेलना को अनुभव करने लगे तो वह अमर बनने के लिए, देव बनने के लिए व्याकुल हो उठे। तब मार-काट, हिंसा, द्वेष कहाँ रहे ? तब किसी को बिगाड़ने की आवश्यकता न रहे, सबको बनाना ही काम रह जाए। अहो, अमर को मारने की इच्छा करने वाले कितना व्यर्थ प्रयास कर रहे हैं ! परितृप्त ज्ञानी देव को हानि पहुँचाना चाहनेवाले कितने भ्रम में हैं ! अपनी शक्ति का कितना दुरुपयोग कर रहे हैं ? हे परमेश्वर ! तू उनपर दया कर।

शब्दार्थ–सोमं अपाम= मैंने सोम का पान किया है, **अमृता: अभूम=** अमर हो गया हूँ। **ज्योति: अगन्म=** प्रकाश पा लिया है। **देवान् अविदास=** देवों को प्राप्त हो गया हूँ, देव हो गया हूँ, मैंने दिव्यता पा ली है, अत: अब **नूनम्=** निश्चय से **अराति:=** शत्रु, दान का अभाव अस्मान् किं **कृणवत्** = हमारा क्या करेगा और **मर्त्यस्य धूर्ति:=** मरणशील मनुष्य की हिंसा **अमृत=** हे अमृतदेव ! **किम्=** मेरा क्या बिगाड़ेगी !

महाराणा प्रताप की गौरवगाथा

राणा सांगा का ये वंशज,
रखता था रजपूती शान।
कर स्वतंत्रता का उद्घोष,
वह भारत का था अभिमान।

मानसींग ने हमला करके,
राणा जंगल दियो पठाय।
सारे संकट क्षण में आ गए,
घास की रोटी दे खवाय।

हल्दी घाटी रक्त से सन गई,
अरिदल मच गई चीख–पुकार।
हुआ युद्ध घनघोर अरावली,
प्रताप ने भरी हुंकार।

शत्रु समूह ने घेर लिया था,
डट गया सिंह–सा कर गर्जन।
सर्प–सा लहराता प्रताप,
चल पड़ा शत्रु का कर मर्दन।

मान सींग को राणा ढूंढे,
चेतक पर बन के असवार।
हाथी के सिर पर दो टापें,
रख चेतक भरकर हुंकार।

रण में हाहाकार मचो तब,
राणा की निकली तलवार
मौत बरस रही रणभूमि में,
राणा जले हृदय अंगार।

आंखन बाण लगो राणा के,
रण में न कछु रहो दिखाय।
स्वामिभक्त चेतक ले उड़ गयो,
राणा के लय प्राण बचाय।

मुकुट लगाकर राणाजी को,
मन्नाजी दय प्राण गंवाय।
प्राण त्यागकर घायल चेतक,
सीधो स्वर्ग सिधारो जाय।

सौ मूड़ को अकबर हो गयो,
जीत न सको बनाफर राय।
स्वाभिमान कभी नहीं छूटे,
चाहे तन से प्राण गंवाय।

भारतीय वीरांगना रानी लक्ष्मी बाई...

भारतीय वसुंधरा को गौरवान्वित करने वाली झाँसी की रानी वीरांगना लक्ष्मीबाई वास्तविक अर्थ में आदर्श वीरांगना थीं। सच्चा वीर कभी आपत्तियों से नहीं घबराता है। प्रलोभन उसे कर्तव्य पालन से विमुख नहीं कर सकते। उसका लक्ष्य उदार और उच्च होता है। उसका चरित्र अनुकरणीय होता है। अपने पवित्र उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वह सदैव आत्मविश्वासी, कर्तव्य परायण, स्वाभिमानी और धर्मनिष्ठ होता है। ऐसी ही थीं वीरांगना लक्ष्मीबाई।

महारानी लक्ष्मीबाई का जन्म काशी में 19 नवंबर 1835 को हुआ। इनके पिता मोरोपंत ताम्बे चिकनाजी अप्पा के आश्रित थे। इनकी माता का नाम भागीरथी बाई था। महारानी के पितामह बलवंत राव के बाजीराव पेशवा की सेना में सेनानायक होने के कारण मोरोपंत पर भी पेशवा की कृपा रहने लगी। लक्ष्मीबाई अपने बाल्यकाल में मनुबाई के नाम से जानी जाती थीं।

इधर सन् 1838 में गंगाधर राव को झाँसी का राजा घोषित किया गया। वे विधुर थे। सन् 1850 में मनुबाई से उनका विवाह हुआ। सन् 1851 में उनको पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। झांसी के कोने–कोने में आनंद की लहर प्रवाहित हुई, लेकिन चार माह पश्चात उस बालक का निधन हो गया। सारी झांसी शोक सागर में निमग्न हो गई। राजा गंगाधर राव को तो इतना गहरा धक्का पहुंचा कि वे फिर स्वस्थ न हो सके और 21 नवंबर 1853 को चल बसे। यद्यपि महाराजा का निधन महारानी के लिए असहनीय था, लेकिन फिर भी वे घबराई नहीं, उन्होंने विवेक नहीं खोया। राजा गंगाधर राव ने अपने जीवनकाल में ही अपने परिवार के बालक दामोदर राव को दत्तक पुत्र मानकर अंग्रेजी सरकार को सूचना दे दी थी। परंतु ईस्ट इंडिया कंपनी की सरकार ने दत्तक पुत्र को अस्वीकार कर दिया। 27 फरवरी 1854 को लार्ड डलहौजी ने गोद की नीति के अंतर्गत दत्तकपुत्र दामोदर राव की गोद अस्वीकृत कर दी और झांसी को अंग्रेजी राज्य में मिलाने की घोषणा कर दी।

पोलेटिकल एजेंट की सूचना पाते ही रानी के मुख से यह वाक्य प्रस्फुटित हो गया, 'मैं अपनी झाँसी नहीं दूंगी'। 7 मार्च 1854 को झाँसी पर अंग्रेजी का अधिकार हुआ। झांसी की रानी ने पेंशन अस्वीकृत कर दी व नगर के राजमहल में निवास करने लगीं। यहीं से भारत की प्रथम स्वाधीनता क्रांति का बीज प्रस्फुटित हुआ। अंगरेजों की राज्य लिप्सा की नीति से उत्तरी भारत के नवाब और राजे –महाराजे

असंतुष्ट हो गए और सभी में विद्रोह की आग भभक उठी। रानी लक्ष्मीबाई ने इसको स्वर्णावसर माना और क्रांति की ज्वालाओं को अधिक सुलगाया तथा अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह करने की योजना बनाई।

नवाब वाजिद अली शाह की बेगम हजरत महल, अंतिम मुगल सम्राट की बेगम जीनत महल, स्वयं मुगल सम्राट बहादुर शाह, नाना साहब के वकील अजीमुल्ला शाहगढ़ के राजा, वानपुर के राजा मर्दनसिंह और तात्या टोपे आदि सभी महारानी के इस कार्य में सहयोग देने का प्रयत्न करने लगे। भारत की जनता में विद्रोह की ज्वाला भभक गई। समस्त देश में सुसंगठित और सुदृढ रूप से क्रांति को कार्यान्वित करने की तिथि 31 मई 1857 निश्चित की गई, लेकिन इससे पूर्व ही क्रांति की ज्वाला प्रज्ज्वलित हो गई और 7 मई 1857 को मेरठ में तथा 4 जून 1857 को कानपुर में भीषण विप्लव हो गए। कानपुर तो 28 जून 1857 को पूर्ण स्वतंत्र हो गया। अंगरेजों के कमांडर सर ह्यूरोज ने अपनी सेना को सुसंगठित कर विद्रोह दबाने का प्रयत्न किया।

उन्होंने सागर, गढ़कोटा, शाहगढ़, मदनपुर, मडखेड़ा, वानपुर और तालबेहट पर अधिकार कियाऔर नृशंसतापूर्ण अत्याचार किए। फिर झांसी की ओर अपना कदम बढ़ाया और अपना मोर्चा कैमासन पहाड़ी के मैदान में पूर्व और दक्षिण के मध्य लगा लिया।

लक्ष्मीबाई पहले से ही सतर्क थीं और वानपुर के राजा मर्दनसिंह से भी इस युद्ध की सूचना तथा उनके आगमन की सूचना प्राप्त हो चुकी थी। 23 मार्च 1858 को झाँसी का ऐतिहासिक युद्ध आरंभ हुआ। कुशल तोपची गुलाम गौस खां ने झाँसी की रानी के आदेशानुसार तोपों के लक्ष्य साधकर ऐसे गोले फेंके कि पहली बार में ही अंग्रेजी सेना के छक्के छूट गए।

रानी लक्ष्मीबाई ने सात दिन तक वीरतापूर्वक झांसी की सुरक्षा की और अपनी छोटी–सी सशस्त्र सेना से अंग्रेजों का बड़ी बहादुरी से मुकाबला किया। रानी ने खुलेरूप से शत्रु का सामना किया और युद्ध में अपनी वीरता का परिचय दिया। वे अकेले ही अपनी पीठ के पीछे दामोदर राव को कसकर घोड़े पर सवार हो अंग्रेजों से युद्ध करती रहीं। बहुत दिन तक युद्ध का क्रम इस प्रकार चलना असंभव था। सरदारों का आग्रह मानकर रानी ने कालपी प्रस्थान किया। वहां जाकर वे शांत नहीं बैठीं।

उन्होंने नाना साहब और उनके योग्य सेनापति तात्या टोपे से संपर्क स्थापित किया और विचार–विमर्श किया। रानी की वीरता और साहस का लोहा अंग्रेज मान गए, लेकिन उन्होंने रानी का पीछा किया। रानी का घोड़ा बुरी तरह घायल हो गया और अंत में वीरगति को प्राप्त हुआ, लेकिन रानी ने साहस नहीं छोड़ा और शौर्य का प्रदर्शन किया। कालपी में महारानी और तात्या टोपे ने योजना बनाई और अंत में नाना साहब, शाहगढ़ के राजा वानपुर के राजा मर्दनसिंह आदि सभी ने रानी का साथ दिया। रानी ने ग्वालियर पर आक्रमण किया और वहां के किले पर अधिकार कर लिया। विजयोल्लास का उत्सव कई दिनों तक चलता रहा लेकिन रानी इसके विरुद्ध थीं। यह समय विजय का नहीं था, अपनी शक्ति को सुसंगठित कर अगला कदम बढ़ाने का था।

सेनापति सर ह्यूरोज अपनी सेना के साथ संपूर्ण शक्ति से रानी का पीछा करता रहा और आखिरकार वह दिन भी आ गया जब उसने ग्वालियर का किला घमासान युद्ध करके अपने कब्जे में ले लिया। रानी लक्ष्मीबाई इस युद्ध में भी अपनी कुशलता का परिचय देती रहीं। 18 जून 1858 को ग्वालियर का अंतिम युद्ध हुआ और रानी ने अपनी सेना का कुशल नेतृत्व किया। वे घायल हो गईं और अंततः उन्होंने वीरगति प्राप्त की। रानी लक्ष्मीबाई ने स्वातंत्र्य युद्ध में अपने जीवन की अंतिम आहुति देकर जनता जनार्दन को चेतना प्रदान की और स्वतंत्रता के लिए बलिदान का संदेश दिया।

रानी दुर्गावती...

महारानी दुर्गावती कालिंजर के राजा कीर्तिसिंह चंदेल की एकमात्र संतान थीं। बांदा जिले के कालिंजर किले में 1524 ईसवी की दुर्गाष्टमी पर जन्म के कारण उनका नाम दुर्गावती रखा गया। नाम के अनुरूप ही तेज, साहस, शौर्य और सुन्दरता के कारण इनकी प्रसिद्धि सब ओर फैल गयी। दुर्गावती के मायके और ससुराल पक्ष की जाति भिन्न थी लेकिन फिर भी दुर्गावती की प्रसिद्धि से प्रभावित होकर गोण्डवाना साम्राज्य के राजा संग्राम शाह मडावी ने अपने पुत्र दलपत शाह मडावी से विवाह करके, उसे अपनी पुत्रवधू बनाया था। दुर्भाग्यवश विवाह के चार वर्ष बाद ही राजा दलपतशाह का निधन हो गया। उस समय दुर्गावती की गोद में तीन वर्षीय नारायण ही था। अतः रानी ने स्वयं ही गढ़मंडला का शासन संभाल लिया। उन्होंने अनेक मठ, कुएं, बावड़ी तथा धर्मशालाएं बनवाईं। वर्तमान जबलपुर उनके राज्य का केन्द्र था। उन्होंने अपनी दासी के नाम पर चेरीताल, अपने नाम पर रानीताल तथा अपने विश्वस्त दीवान आधारसिंह के नाम पर आधारताल बनवाया।

रानी दुर्गावती का यह सुखी और सम्पन्न राज्य पर मालवा के मुसलमान शासक बाज़बहादुर ने कई बार हमला किया, पर हर बार वह पराजित हुआ। महान मुगल शासक अकबर भी राज्य को जीतकर रानी को अपने हरम में डालना चाहता था। उसने विवाद प्रारम्भ करने हेतु रानी के प्रिय सफेद हाथी (सरमन) और उनके विश्वस्त वजीर आधारसिंह को भेंट के रूप में अपने पास भेजने को कहा। रानी ने यह मांग ठुकरा इस पर अकबर ने अपने एक रिश्तेदार आसफ खां के नेतृत्व में गोण्डवाना साम्राज्य पर हमला कर दिया। एक बार तो आसफ खां पराजित हुआ, पर अगली बार उसने दुगनी सेना और तैयारी के साथ हमला बोला। दुर्गावती के पास उस समय बहुत कम सैनिक थे। उन्होंने जबलपुर के पास नरई नाले के किनारे मोर्चा लगाया तथा स्वयं पुरुष वेश में युद्ध का नेतृत्व किया। इस युद्ध में 3,000 मुगल सैनिक मारे गये लेकिन रानी की भी अपार क्षति हुई थी।

अगले दिन 24 जून 1564 को मुगल सेना ने फिर हमला बोला। आज रानी का पक्ष दुर्बल था, अतः रानी ने अपने पुत्र नारायण को सुरक्षित स्थान पर भेज दिया। तभी एक तीर उनकी भुजा में लगा, रानी ने उसे निकाल फेंका। दूसरे तीर ने उनकी आंख को बेध दिया, रानी ने इसे भी निकाला पर उसकी नोक आंख में ही रह गयी। तभी तीसरा तीर उनकी गर्दन में आकर धंस गया। रानी ने अंत समय निकट जानकर वजीर आधारसिंह से आग्रह किया कि वह अपनी तलवार से उनकी गर्दन काट दे, पर वह इसके लिए तैयार नहीं हुआ। अतः रानी अपनी कटार स्वयं ही अपने सीने में भोंककर आत्म बलिदान के पथ पर बढ़ गयीं। महारानी दुर्गावती ने अकबर के सेनापति आसफ़ खान से लड़कर अपनी जान गंवाने से पहले पंद्रह वर्षों तक शासन किया था। जबलपुर के पास जहां यह ऐतिहासिक युद्ध हुआ था, उस स्थान का नाम बरेला है, जो मंडला रोड पर स्थित है, वही रानी की समाधि बनी है, जहां गोण्ड जनजाति के लोग जाकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। जबलपुर में स्थित रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय भी इन्ही रानी के नाम पर बनी हुई है।

।। ओ३म् ।।

"जन्म व पुनर्जन्म का आधार हमारे पूर्व जन्मों व वर्तमान जन्म के शुभाशुभ कर्म"

हम प्रतिदिन संसार में नये बच्चों के जन्म के समाचार सुनते रहते हैं। इसी प्रकार पशु व पक्षियों आदि के बच्चे भी जन्म लेते हैं। मनुष्य व पशु आदि प्राणियों के जन्म का आधार क्या है? इसका उत्तर न विज्ञान के पास है और न अधिकांश मत–मतान्तरों के पास है। इसका तर्क एवं युक्ति संगत सत्य उत्तर वेद व वैदिक साहित्य में मिलता है। वेद एवं वैदिक साहित्य का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि मनुष्य जन्म का आधार हमारे पूर्व जन्म में किये गये वह शुभ व अशुभ कर्म हैं जिनका हम भोग नहीं कर पाये हैं। उन बचे हुए कर्मों के भोग के लिए ही ईश्वर ने हमें यह जन्म दिया है। योग दर्शन के एक सूत्र के अनुसार हमारे पूर्वजन्म के बचे हुए शुभ व अशुभ कर्मों के आधार पर परमात्मा हमारी योनि अथवा जाति, आयु और सुख–दुख रूपी भोगों को निर्धारित करते हैं और उसके अनुसार ही हमारा जन्म हो जाता है। पूर्व जन्म के कर्म संचय को ही प्रारब्ध कहते हैं। उसी के आधार पर हमारी मनुष्य योनि व मनुष्य जाति परमात्मा ने तय की थी। हमारी जो आयु होती है उसका आधार भी हमारा प्रारब्ध ही होता है। इसी कारण कोई कम आयु में तो कोई अधिक आयु में मृत्यु को प्राप्त होते हैं। ऋषि दयानन्द सरस्वती (1824–1883) ने कहा है कि पुरुषार्थ प्रारब्ध से बड़ा होता है। इसका तात्पर्य यह है कि मनुष्य वर्तमान जीवन में जो पुरुषार्थ करता है उससे प्रारब्ध से मिलने वाले सुख व दुःखों वा ज्ञान प्राप्ति आदि उपलब्धियों को सुधारा वा प्रभावित किया जा सकता है। इस जन्म में हमने जो शिक्षा प्राप्त की है वह हमें प्रत्यक्ष रूप से पुरुषार्थ से प्राप्त होती है। यदि हम विद्याध्ययन में पुरुषार्थ न करते तो हमें विद्या प्राप्त न होती। यदि हम स्वास्थ्य के नियमों का पालन न करते तो हमारा स्वास्थ्य भी अच्छा न होता। बहुत से लोगों का स्वास्थ्य खराब होता है। वह रोगी होते हैं और अल्पायु में ही उनकी मृत्यु हो जाती है। इसका कारण इस जन्म में स्वास्थ्य के नियमों का पालन न करना अर्थात् उचित पुरुषार्थ न करना ही होता है। यह रोग व अस्वस्थता पूर्वजन्म के कर्मों व प्रारब्ध के अनुसार नहीं होती अपितु इसमें इस जन्म के कर्मों का भी महत्व होता है। अतः पुरुषार्थ से हम अपनी जाति तो नहीं बदल सकते परन्तु आयु और सुख व दुःख रूपी भोगों में एक सीमा तक सुधार व बिगाड़ तो कर ही सकते हैं।

पुनर्जन्म का आधार हमारे पूर्वजन्म के शुभ व अशुभ कर्म हैं। सब जीवात्माओं के इस जन्म के कर्म एक समान नहीं होते। अतः जिन जिन जीवात्माओं का जन्म हमारे आसपास होता है उनके पूर्व जन्म के कर्मों में समानता न होने अथवा विविधता होने से उनके माता, पिता, परिवेश आदि अलग अलग होते हैं। बच्चों की विद्याग्रहण करने की सामर्थ्य व शारीरिक बल आदि भी भिन्न भिन्न होने का कारण पूर्वजन्म के

कर्म मुख्य होते हैं। इसके साथ ही माता–पिता द्वारा जिस सन्तान को जन्म दिया जाता है, उसका गर्भकाल में पालन भी विशेष महत्व रखता है। जन्म व पुनर्जन्म का आधार यदि मनुष्य आदि प्राणियों के पूर्वकृत कर्म न होते तो सभी मनुष्यों की आकृति व परिवेश, शारीरिक सामर्थ्य एवं बुद्धि आदि एक समान होनी चाहिये थी। सभी मनुष्यों के गुण, कर्म, स्वभाव, सामर्थ्य, प्रवृत्ति आदि में समानता न होने का मुख्य कारण उनके पूर्वजन्म के कर्म व संस्कारों की भिन्नता ही निश्चित होती है।

कर्मों के विषय में जब विचार करते हैं तो हमें यह ज्ञात होता है कि बहुत से मनुष्य शुभ कर्म करते हैं और बहुत लोग अपने स्वभाव व प्रवृत्ति से अशुभ व अवैदिक कर्म करते हैं जो कि उन्हें नहीं करने चाहिये। यह इस जन्म के कर्म होते हैं जिनका उसे वर्तमान व भविष्य में भोग करना होगा। इसके अतिरिक्त उसने पूर्व के जो कर्म किये होते हैं उसे भी उसे भोगना होता है। सामान्य जीवन में हम देखते हैं कि यदि हम किसी से ऋण लें तो हमें पहले पुराना ऋण व बकाया धन का भुगतान चुकता करना होता है। उसके बाद हमें नया ऋण मिलता है। परमात्मा को भी जीवों के पुराने कर्मों का भोग कराना है और वर्तमान जीवन में भी अशुभ व शुभ कर्म संग्रहीत हो रहे हैं। उचित प्रतीत होता है कि पहले पुराने बचे हुए कर्मों का भोग कराया जाये। शायद यही कारण है कि मनुष्य जब इस जन्म में अशुभ कर्म करता है तो उसे उसी समय उनका फल मिलता हुआ न देख कर लोग कर्म फल सिद्धान्त को स्वीकार नहीं करते। उन्हें विचार करना चाहिये कि अशुभ कर्म करने वाले मनुष्य ने पूर्व जन्मों व जीवन के आरम्भ में भी जो शुभ व अशुभ कर्म किये हैं, उनका भी उसे भोग करना है। इसी कारण से कई अशुभ कर्मों की प्रवृत्ति वाले मनुष्यों को सुखी व सम्पन्न देखा जाता है। जब वह सुखी होते हैं तो इसका अर्थ यह लगता है कि वह पूर्व किये हुए अपने शुभ कर्मों का भोग कर रहे हैं। इस जन्म में वर्तमान समय में वह जो अशुभ कर्म कर रहा है वह उसे अपने जीवन में आगे अथवा मृत्यु के बाद पुनर्जन्म में भोगने होंगे। समस्त वैदिक साहित्य जो कि हमारे साक्षात्कृतधर्मा ऋषियों ने प्रदान किया है, उसके अनुसार जीवात्मा को अपने किये हुए शुभ व अशुभ सभी कर्मों के सुख व दुःख रूपी फलों को अवश्य ही भोगना होता है। कोई भी मनुष्य अपने किसी भी कर्म का फल भोगे बिना नहीं छूट सकता। अतः ईश्वर व वैदिक कर्म फल सिद्धान्त में विश्वास रखना चाहिये। हम जो वैदिक शुभ कर्म, सन्ध्या, यज्ञ, मात–पिता–आचार्यों की सेवा, परोपकार, दान आदि कर रहे हैं, उसके कर्म भी हमें यथासमय ईश्वरीय व्यवस्था से मिलेंगे।

हम मनुष्यों के आचरणों पर भी विचार कर सकते हैं जो सदैव वेद सम्मत शुभ व पुण्य कर्म ही करते हैं। उन्हें पुनर्जन्म में मनुष्य योनि प्राप्त होने के साथ ऐसे परिवार में उनको जन्म मिलने की सम्भावना होती है जहां सभी लोग धार्मिक एवं वेदाचरण व सदाचरण करने वाले होते हों। इसके विपरीत अधिकांश में अशुभ व दुराचरण आदि कर्म करने वालों का आगामी जन्म मनुष्यादि श्रेष्ठ योनि में न होकर पशु, पक्षी आदि नीच योनियों में होने की सम्भावना होती है। यदि ऐसा न हो तो फिर इस जन्म में लोग

सद्कर्म क्यों करेंगे? शायद कोई भी सद्कर्म नहीं करेगा। कोई भी व्यवस्था लम्बी अवधि तक सफलता के साथ तभी चल सकती है जिसमें सद्गुणों की प्रशंसा तथा दुर्गुणों की भर्त्सना की जाती हो। यजुर्वेद का 40/2 मन्त्र 'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतम् समः' भी सकेंत कर रहा है कि मनुष्य वेद विहित कर्म करके स्वस्थ रहते हुए सौ वर्ष की आयु तक सुखपूर्वक जीवित रहने की इच्छा करे। इसका सीधा अर्थ यह है कि वेद विहित सद्कर्मों को करने से हमारा यह जीवन सुख, समृद्धि से युक्त होकर दीर्घायु को प्राप्त होता है। जब सद्कर्मों का प्रभाव इस जन्म में होता है तो निश्चय ही पुनर्जन्म में भी भोग न किये जा सके कर्मों से हमें सुख व ज्ञान आदि का लाभ होगा।

मनुष्य का आत्मा अनादि व अमर है। ईश्वर अनादि व अमर है। प्रकृति भी अनादि व नाश रहित है। हमारी यह सृष्टि ईश्वर द्वारा मूल प्रकृति से ही बनी है। दर्शन का सिद्धान्त है कि यह सृष्टि उत्पत्ति व प्रलय को प्राप्त होती है और यह कार्य जगत वा सृष्टि प्रवाह से अनादि है। ईश्वर, जीव व प्रकृति के अनादि व अमर होने से भी यह निश्चित होता है कि यह सृष्टि अनादि काल से बनती व प्रलय को प्राप्त होती आ रही है और भविष्य में भी ऐसा ही होगा। जैसे रात्रि के बाद दिन और दिन के बाद रात्रि आती व जाती रहती हैं इसी प्रकार से सृष्टि की उत्पत्ति व प्रलय सदैव से होती आयीं हैं और सदैव होती रहेंगी। हम इस जन्म में मनुष्य हैं और विचार करने पर निश्चित होता है कि असंख्य बार हमारे अनेक व प्रायः सभी योनियों में जन्म हो चुके हैं। सृष्टि के प्रवाह से अनादि होने से यह भी निश्चित होता है कि हम अनेक बार मोक्ष भी रहे हो सकते हैं। सृष्टि में हम जितनी भी प्राणी योनियां देखते हैं उनमें प्रायः हम सभी योनियों में अनेक अनेक बार जन्म ले चुकें हैं। अतः इन तथ्यों व को जानकर मनुष्य को वेदों का अध्ययन कर उनकी शिक्षाओं के अनुसार ही जीवनयापन करना चाहिये। इसी मार्ग पर चलने से हमें इस जीवन व परजन्म में अधिकाधिक सुख, श्रेष्ठ जीवन व योनि सहित मोक्ष सुख भी प्राप्त हो सकता है।

हमारा यह मनुष्य जीवन हमारे पूर्व जन्मों के कर्मों वा प्रारब्ध का परिणाम है। ईश्वर ने हमें वा हमारी आत्मा को सुख प्रदान करने के लिए ही यह जीवन दिया है। ईश्वर अर्यमा अर्थात् न्यायाधीश है। वह पक्षपात रहित होकर जीव के प्रत्येक कर्म बिना भूले न्याय करता है। जो मनुष्य पाप कर्म करते हैं ईश्वर उनके लिए रुद्र वा रूलाने वाला होता है। यह व्यवस्था हम संसार में देख रहे हैं। अतः हमें कर्म फल सिद्धान्त को अधिकाधिक जानकर उसे व्यवहारिक रूप में अपने जीवन में स्थान देना चाहिये। ओ३म् शम्।

—मनमोहन कुमार आर्य

महान बलिदानी-बंदा बैरागी
9 जून/बलिदान-दिवस

आज बन्दा बैरागी का बलिदान दिवस है। कितने हिन्दू युवाओं ने उनके अमर बलिदान की गाथा सुनी है? बहुत कम। क्यूंकि वामपंथियों द्वारा लिखे गए पाठयक्रम में कहीं भी बंदा बैरागी का भूल से भी नाम लेना उनके लिए अपराध के समान है। फिर क्या वीर बन्दा वैरागी का बलिदान व्यर्थ जाएगा ? क्या हिन्दू समय रहते जाग पाएगा ?क्या आर्य हिन्दू जाति अपने पुर्वजों का ऋण उतारने के लिये संकल्पित होगी ?

इस लेख के माध्यम से जाने बंदा बैरागी के अमर बलिदान की गाथा। बन्दा बैरागी का जन्म 27 अक्तूबर, 1670 को ग्राम तच्छल किला, पुंछ में श्री रामदेव के घर में हुआ। उनका बचपन का नाम लक्ष्मणदास था। युवावस्था में शिकार खेलते समय उन्होंने एक गर्भवती हिरणी पर तीर चला दिया। इससे उसके पेट से एक शिशु निकला और तड़पकर वहीं मर गया। यह देखकर उनका मन खिन्न हो गया। उन्होंने अपना नाम माधोदास रख लिया और घर छोड़कर तीर्थयात्रा पर चल दिये। अनेक साधुओं से योग साधना सीखी और फिर नान्देड़ में कुटिया बनाकर रहने लगे।

इसी दौरान गुरु गोविन्दसिंह जी माधोदास की कुटिया में आये। उनके चारों पुत्र बलिदान हो चुके थे। उन्होंने इस कठिन समय में माधोदास से वैराग्य छोड़कर देश में व्याप्त मुस्लिम आतंक से जूझने को कहा। इस भेंट से माधोदास का जीवन बदल गया। गुरुजी ने उसे बन्दा बहादुर नाम दिया। फिर पाँच तीर, एक निशान साहिब, एक नगाड़ा और एक हुक्मनामा देकर दोनों छोटे पुत्रों को दीवार में चिनवाने वाले सरहिन्द के नवाब से बदला लेने को कहा।

बन्दा हजारों सिख सैनिकों को साथ लेकर पंजाब की ओर चल दिये। उन्होंने सबसे पहले श्री गुरु तेगबहादुर जी का शीश काटने वाले जल्लाद जलालुद्दीन का सिर काटा। फिर सरहिन्द के नवाब वजीरखान का वध किया। जिन हिन्दू राजाओं ने मुगलों का साथ दिया था, बन्दा बहादुर ने उन्हें भी नहीं छोड़ा। इससे चारों ओर उनके नाम की धूम मच गयी।

उनके पराक्रम से भयभीत मुगलों ने दस लाख फौज लेकर उन पर हमला किया और विश्वासघात से 17 दिसम्बर, 1715 को उन्हें पकड़ लिया। उन्हें लोहे के एक पिंजड़े में बन्दकर, हाथी पर लादकर सड़क मार्ग से दिल्ली लाया गया। उनके साथ हजारों सिख भी कैद किये गये थे। इनमें बन्दा के वे 740 साथी भी थे, जो प्रारम्भ से ही उनके साथ थे। युद्ध में वीरगति पाए सिखों के सिर काटकर उन्हें भाले की नोक पर टाँगकर दिल्ली लाया गया। रास्ते भर गर्म चिमटों से बन्दा बैरागी का माँस नोचा जाता रहा।

काजियों ने बन्दा और उनके साथियों को मुसलमान बनने को कहा; पर सबने यह प्रस्ताव ठुकरा दिया। दिल्ली में आज जहाँ हार्डिंग लाइब्रेरी है, वहाँ 7 मार्च, 1716 से प्रतिदिन सौ वीरों की हत्या की जाने

लगी। एक दरबारी मुहम्मद अमीन ने पूछा – तुमने ऐसे बुरे काम क्यों किये, जिससे तुम्हारी यह दुर्दशा हो रही है ?

बन्दा ने सीना फुलाकर सगर्व उत्तर दिया– मैं तो प्रजा के पीड़ितों को दण्ड देने के लिए परमपिता परमेश्वर के हाथ का शस्त्र था। क्या तुमने सुना नहीं कि जब संसार में दुष्टों की संख्या बढ़ जाती है, तो वह मेरे जैसे किसी सेवक को धरती पर भेजता है।

बन्दा से पूछा गया कि वे कैसी मौत मरना चाहते हैं ? बन्दा ने उत्तर दिया, मैं अब मौत से नहीं डरता; क्योंकि यह शरीर ही दुःख का मूल है। यह सुनकर सब ओर सन्नाटा छा गया। भयभीत करने के लिए उनके पाँच वर्षीय पुत्र अजय सिंह को उनकी गोद में लेटाकर बन्दा के हाथ में छुरा देकर उसको मारने को कहा गया।

बन्दा ने इससे इन्कार कर दिया। इस पर जल्लाद ने उस बच्चे के दो टुकड़ेकर उसके दिल का माँस बन्दा के मुँह में ठूँस दिया; पर वे तो इन सबसे ऊपर उठ चुके थे। गरम चिमटों से माँस नोचे जाने के कारण उनके शरीर में केवल हड्डियाँ शेष थी। फिर 9 जून, 1716 को उस वीर को हाथी से कुचलवा दिया गया। इस प्रकार बन्दा वीर बैरागी अपने नाम के तीनों शब्दों को सार्थक कर बलिपथ पर चल दिये।

बंदा बैरागी जैसे महान वीरों ने हमारे धर्म की रक्षा के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। खेदजनक बात यह है कि उनकी बलिदानी से आज की हमारी युवा पीढ़ी अनभिज्ञ है। यह एक सुनियोजित षड़यंत्र है कि जिन–जिन महापुरुषों से हम प्रेरणा ले सके उनके नाम तक विस्मृत कर दिए जाये। इस लेख को इतना शेयर कीजिये कि भारत का बच्चा बच्चा बंदा बैरागी के महान बलिदान से प्रेरणा ले सके।

सदस्यता आवेदन - पत्र

(नाम, पता तथा पिन कोड, फोन नम्बर, निम्न फार्म में साफ - साफ अक्षरों में लिखकर भेजें।)

नाम ..... **उम्र** ..... **दिनांक** .....

पता .....

शहर ..... **राज्य** ..... **पिन** .....

फोन ..... **मोबाइल** .....

चैक / मनीऑर्डर/डी.डी. नम्बर ..... **रुपये** .....

ड्राफ्ट/चैक / मनीऑर्डर **''वैदिक राष्ट्र''** के नाम से **'वैदिक राष्ट्र'** कार्यालय - 219, संचार नगर एक्सटेंशन, कनाड़िया रोड़, इन्दौर (म.प्र.) 452016 अथवा बैंक ऑफ महाराष्ट्र - शाखा: कनाड़िया रोड़, इन्दौर में सीधे खाता क्रं. 6003657384, IFSC Code: MAH0001396 में जमा कराएं।

श्रीगुरु जी और बन्दा बहादुर का मिलन (इतिहास निर्माण करने वाली घटना)

गुरु गोविन्द सिंह एक ऐसे सामर्थ्यवान् व्यक्ति की खोज करने लगे जिसको वे भावी नेतृत्व सौंप सकें। अपने दीवानों और सभासदों से विचार–विमर्श करने के बाद उन्होंने नान्देड़ के एक आश्रम में वर्षों से रह रहे वैरागी माधोदास को नेतृत्व सौंपने का मन बना लिया।

भट्ट स्वरूप सिंह कोशिश बताते हैं :–

"सम्वत् १७६५ विक्रमी आश्विन प्रविष्टे तृतीया (सितम्बर १७०८ ईसवी) के दिन सूर्यग्रहण पर लगे मेले पर गुरु जी साथी सिक्खों समेत माधोदास वैरागी के डेरे पर गए। मेला गोदावरी नदी के किनारे लगा हुआ था परन्तु माधोदास डेरे में उपस्थित नहीं था" (गुरू कीआं साखीआं, १८४७ विक्रमी, प्रो. प्यारा सिंह पदम द्वारा सम्पादित, सिंह ब्रदर्ज़, अमृतसर, पांचवां संस्करण, २००३ ईसवी, साखी ११०, पृष्ठ १६७)।

जब सांझ को वैरागी माधोदास गोदावरी नदी में स्नान करने बाद अपने डेरे पर लौटा तो उसके चेलों ने बताया कि प्रमुख अतिथि के सिक्खों ने डेरे के एक हिरन तथा एक बकरी और उसके दो लेलों को झटका कर अपने लिए भोजन तैयार कर लिया है।

यहां यह उल्लेखनीय है कि पूर्ववर्ती जीवन में जम्मू में रहने वाले लक्ष्मणदास को अपने हाथों शिकार में घायल हुई एक गर्भवती हिरनी की दयनीय अवस्था ने राजपूत से एक वैरागी बना दिया था। तब से वह वैराग्य को धारण करके अनेक स्थानों से होता हुआ अन्ततः नान्देड़ में आ बसा था।

अब अपने आश्रम के चार प्राणियों के झटकाए जाने की बात सुनकर वह रोष से भर उठा और उसी भाव से श्रीगुरु जी के पास आया तो वैरागी का मनो–भाव जानकर वे अर्थपूर्ण मुस्कान के साथ बोले :

"माधोदास ! हम तुम्हें मिलने आए हैं, तुम कहां गए हुए थे।" वैरागी ने रोष भरे शब्दों में उत्तर दिया : ग़रीब नवाज़ ! मैं आपको नहीं जानता, आप कहां से आए हैं। यदि आप मुझे जानते थे तो मेरी प्रतीक्षा कर लेनी थी। ये प्राणी क्यों मारने थे, यह डेरा वैष्णव साधुओं का है !!

श्रीगुरु जी ने प्रत्युत्तर में कहा : माधोदास ! हमारे से तुम्हारी पहचान एक बार ऋषिकेश–हरिद्वार में हुई थी, उस समय तुम एक साधु–मण्डली में थे जिसका मुखिया औघड़नाथ योगी नासिक वाला था।

इस पर वैरागी बोला : महाराज ! आप गुरु गोविन्द राय जी हो जिनके पिता ने दिल्ली में जाकर अपना शीश बलिदान किया था !!

वैरागी का रोष कम होने लगा था। तब श्रीगुरु जी ने हां में उत्तर देते हुए आगे कहा : माधोदास ! तुमने पूछा है कि यह डेरा वैष्णव साधुओं का है जहां ये प्राणी क्योंकर मारने थे, यह शंका मेरी निवृत्त करें। माधोदास ! मुझे पता था, इसीलिए ये प्राणी मारे हैं, वरना इन्हें मारने की क्या ज़रूरत थी !! मैं तुम्हें जगाने के लिए आया हूं, वरना यहां चल कर आने की क्या ज़रूरत थी !! अन्त में गुरु गोविन्द सिंह ने अपने आने का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए कहा : देखो माधोदास ! इन तीन – चार जानवरों के मारने से तो तेरा आश्रम

भ्रष्ट हो गया, तम्हें इस विशाल आश्रम हिन्दुस्तान का पता कैसे नहीं जहां मुस्लिम–सत्ता द्वारा सैंकड़ों–हज़ारों मज़लूम निर्दोष हिन्दू नित्य मारे जा रहे हैं। मैं केवल तेरा ध्यान दिलाने के लिए यहां तुम्हारे आश्रम में आया हूं। वैरागी की अपने आश्रम के प्राणियों के प्रति व्यक्त की गई व्यक्तिगत–पीड़ा श्रीगुरु जी के इस एक वाक्य के प्रभाव से पलक झपकते ही राष्ट्रगत–पीड़ा में परिणत हो गई। वैरागी द्रवित होकर बोला : मैं आज से दिल–ओ–जान से आपका बन्दा हूं, मुझे आगे के लिए कारसेवा बताएं (गुरू कीआं साखीआं, साखी ११०, पृष्ठ १६७–१६८)।

इस प्रकार वैरागी पहले वाला माधोदास नहीं रहा। वह अपना मान–ताण त्यागकर श्रीगुरु जी का सही बन्दा बन गया। तब से वह "बन्दा वैरागी" कहलाने लगा। भाई केसर सिंह छिब्बर अपनी रचना बंसावलीनामा दसां पातशाहीआं का (१८२६ विक्रमी, प्रो. प्यारा सिंह पदम द्वारा सम्पादित, सिंह ब्रदर्ज़, अमृतसर, १६६७ ईसवी) १०/६२३–६२५ में बताते हैं :

"उसके बाद श्रीगुरु जी ने अपने पास से सब आदमी दूर कर दिए। दोनों ने परस्पर मिल–बैठ कर गुप्त वार्तालाप किया। अन्ततः वैरागी गुरु जी के चरण आ लगा। पाहुल=दीक्षा लेकर गुरु का दृढ़–निश्चयी सिंह बन गया। उसने गुरु साहिब से कहा : मैं आपका बन्दा हूं। आप हैं पूर्ण सत्गुरु और मेरे रक्षक। इस प्रकार श्रीगुरु जी भावी नेतृत्व का भार उसे सौंप कर वहां से चले आए। वह आश्रम के बाहरी द्वार तक श्रीगुरु जी को विदा करने आया और फिर मुड़ गया। मुड़ते हुए उसने श्रीगुरु जी से पूछा : कितनी मुद्दत तक बात पर्दे में रखनी है !

तब गुरु जी ने कहा : नौ मास दस दिन तक। इसके बाद जितना ठीक समझो।" इसके कुछ दिनों बाद वैरागी माधोदास = बन्दा वैरागी ने श्रीगरु जी की आज्ञा के अनुरूप अपना आश्रम हरि दास दक्खनी को सौंप कर स्वयं उनके निवास स्थान पर आ पहुंचा। दूसरे दिन भाई दया सिंह ने माधोदास से कहा : सन्त जी ! तैयारी करें, आपको खाण्डे की पाहुल देनी है। इसके बाद श्रीगुरु जी ने उसे अपने पावन हाथों से विधिपूर्वक खाण्डे की पाहुल देकर वैरागी से सिंह सजा दिया (गुरू कीआं साखीआं, साखी १११, पृष्ठ १६६)।

भट्ट स्वरूप सिंह कोशिश आगे बताते हैं :– "सम्वत् १७६५ विक्रमी की कार्तिक शुक्ला तृतीया के दिन वैरागी माधोदास=बन्दा सिंह को पन्थ का जत्थेदार बनाकर श्रीगुरु जी ने उसे नायक भगवन्त सिंह बंगेश्वरी के टांडे में मद्रदेश (पंजाब का प्राचीन नाम) जाने का आदेश दिया। उसके हमराह भाई भगवन्त सिंह, कोइर सिंह, बाज़ सिंह, विनोद सिंह और काहन सिंह – ये पांच प्रमुख सिक्ख भेजे गए। श्रीगुरु जी ने बन्दा सिंह को एक कृपाण, एक मुहर, पांच तीर और एक निशान साहिब देकर पंजाब की ओर विदा किया (गुरू कीआं साखीआं, १८४७ विक्रमी, साखी १११, पृष्ठ २००)।

श्रीगुरु गोविन्द सिंह से प्रेरणा पाकर शूरवीर बन्दा वैरागी ने लगभग नौ मास के भीतर गुप्त रूप से एक बलिष्ठ सैनिक संगठन खड़ा कर लिया और उसके बाद मुग़लों को पराजित करना प्रारम्भ कर दिया। फिर उस शूरवीर ने श्रीगुरु जी के पिता, माता और पुत्रों के दोषी मुस्लिमों को समुचित दण्ड देते हुए सरहिन्द की ईंट से ईंट बजा दी।

राजिंदर सिंह

धर्मरक्षक बिरसा मुंडा और अम्बेडकर वादियों का षड़यंत्र

(बलिदान दिवस 9 जून को विशेष रूप से प्रकाशित)

धर्मरक्षक बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवम्बर 1875 को खूंटी जिले के अडकी प्रखंड के उलिहातु गाँव में हुआ था। उस समय ईसाई स्कूल में प्रवेश लेने के लिए इसाई धर्म अपनाना जरुरी हुआ करता था। तो बिरसा ने धर्म परिवर्तन कर अपना नाम बिरसा डेविड रख दिया गया। उस समय ईसाई पादरी आदिवासियों की जमीन पर मिशन का कब्जा करने की कोशिश करते थे। बिरसा ने इसका विरोध किया जिस कारण वो स्कूल से निकाल दिए गये। ईसाईयों द्वारा प्रलोभन एवं छल–कपट से वनवासियों का धर्मांतरण करने के दुष्चक्र को देखकर अत्यंत व्यथित हुए। उन्होंने ईसाई मिशनरी का विरोध करना आरम्भ कर दिया।

1890–91 से करीब पांच साल तक वैष्णव संत आनन्द पांडे से वैष्णव आचार–विचार का ज्ञान प्राप्त किया और व्यक्तिगत एवं सामजिक जीवन पर धर्म के प्रभाव पर मनन किया। परम्परागत धर्म की ओर उनकी वापसी हुई और उन्होंने धर्मोपदेश देना तथा धर्माचरण का पाठ पढ़ाना शुरू किया। ईसाई छोड़ने वाले सरदार सरदार बिरसा के अनुयायी बनने लगे। बिरसा का पंथ मुंडा जनजातीय समाज के पुनर्जागरण का जरिया बना। उनका धार्मिक अभियान कालांतर में आदिवासियों को अंग्रेजी हुकूमत और इसाई मिशनरियों के विरोध में संगठित होकर आवाज बुलंद करने को प्रेरित करने लगा। उन्होंने मुंडा समाज में व्याप्त अन्धविश्वास और कुरीतियों पर जमकर प्रहार किया। वह जनेऊ, खड़ाऊ और हल्दी रंग की धोती पहनने लगे। उन्होंने कहा की ईश्वर एक है। भूत–प्रेत की पूजा और बलि देना निरर्थक है। सार्थक जीवन के लिए सामिष भोजन और मांस –मछली का त्याग करना जरुरी है। हंडिया पीना बंद करना होगा।

अंग्रेजों द्वारा गौहत्या को देखकर बिरसा मुंडा बहुत व्यथित हुए। उन्होंने इसे सरासर अत्याचार बताया। अंग्रेजों द्वारा विदेशी पहनावा, विदेशी विचार भोले भाले वनवासियों पर लादने का भी बिरसा ने विरोध किया। उनके अनुसार ईसाइयत का कार्य भारतवासियों को अपनी ही जड़ों से दूर करने जैसा हैं।

बिरसा मुंडा ने वनवासियों को एकत्र कर अपनी सेना बनाई और अंग्रेजों से लोहा लिया। नींद में सोते हुए उन्हें अपनी सेना के साथ पकड़ कर जेल भेज दिया गया। जहाँ उनकी केवल 25 वर्ष की आयु में मृत्यु हैजा से हुई। ऐसा कहा जाता है। बिरसा मुंडा के लक्ष्य को पूरा करने के लिए झारखंड सरकार ने धर्मांतरण विरोधी कानून बनाया है। इस कानून के अंतर्गत झूठ,फरेब और प्रलोभन से ईसाई धर्मान्तरण को क़ानूनी रूप से दंडनीय बताया गया है।

यह कानून ही भगवान बिरसा मुण्डा को सच्ची श्रद्धांजली है। बिरसा मुंडा गोरक्षक, स्वदेशी जागरण के उद्घोषक, प्राचीन मान्यताओं एवं धार्मिक परम्पराओं के समर्थक, अंग्रेजों के शत्रु, ईसाई धर्मान्तरण के घोर विरोधी थे। खुद को मूल निवासी और अम्बेडकरवादी कहने वाले लोग बिरसा मुंडा का

केवल वोट के लिए नाम लेते हैं। उनके चिंतन और जीवन के उद्देश्य को वे किसी भी प्रकार से नहीं मानते। उल्टा उसके विपरीत चलते है। अम्बेडकरवादी वनवासी क्षेत्र में ईसाइयों द्वारा चलाये जा रहे धर्मान्तरण का कभी विरोध नहीं करते। अम्बेडकरवादी न ही कभी गौहत्या का विरोध करते है। उलटे गौहत्या करने वालों की पीठ थपथपाते है। अम्बेडकरवादी यज्ञ, जनेऊ और वेद को अन्धविश्वास बताते है और बाइबिल को धर्मपुस्तक कहकर उसकी प्रशंसा करते हैं। अम्बेडकरवादी केवल मनुवाद और ब्राह्मणवाद चिल्ला कर वनवासियों के वोट लेकर अपनी तुच्छ राजनीति चमकाते हैं। वनवासियों के जीवन में सुधार कार्य करने में उनकी कोई रूचि नहीं हैं। अम्बेडकरवादी विदेशी NGO के माध्यम से वनवासी क्षेत्र में कोई भी विकास कार्य नहीं चलने देते। पर्यावरण प्रदूषण और जमीन अधिग्रहण के नाम पर कोर्ट में याचिकाएं डालकर किसी भी बड़े कारखाने को खुलने से रोकते हैं। क्यूंकि अगर वनवासी निर्धन रहेंगे तो ईसाईयों के धर्मान्तरण का आसानी से शिकार बनेंगे।

अब यह पाठकों को सोचना है कि क्या वीर बिरसा मुंडा के नामलेवा अम्बेडकरवादी वाकई में ईमानदार है?

—संजय कुमार

जीवन में अनेक परिस्थितियाँ ऐसी आती हैं, जब व्यक्ति को अनेक कारणों से भय उत्पन्न होता है।

अनेक लोग, जो कमजोर मानसिक शक्ति वाले होते हैं , वे ऐसी परिस्थितियों में घबरा जाते हैं । उनका मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है। ऐसी स्थिति में वे विचलित हो कर कुछ भी कदम उठा सकते हैं, उठा भी लेते हैं। परंतु जीवन में कभी भी ऐसी परिस्थिति आए, तो घबराना नहीं चाहिए।

कबूतर यदि आंखें बंद कर ले, तो बिल्ली भाग नहीं जाएगी। ऐसा नहीं होगा कि बिल्ली कबूतर पर आक्रमण न करे। यदि कबूतर को बिल्ली से अपनी रक्षा करनी हो, तो उसे हिम्मत करनी होगी। आंखें खोलकर बिल्ली को देखना होगा, कि वह कहां से आक्रमण करने वाली है।

उसका मुकाबला करना होगा। अपने पंख मारकर बिल्ली की पकड़ से बाहर निकल जाना होगा। तब उसकी रक्षा हो पाएगी।

ठीक इसी प्रकार से जो व्यक्ति कठिन परिस्थितियों में भय तथा उसके कारण पदार्थ से युद्ध करता है, वह कुछ समय में उस युद्ध को जीत जाता है। उसका भय भी समाप्त हो जाता है, तथा उस कारण से उसको हानि भी नहीं होती।

इसलिए सदा उत्साहित रहें। डरें नहीं, घबराएँ नहीं, चिंता ना करें। भय और उसके कारण से युद्ध करके विजय प्राप्त करें।

—स्वामी विवेकानंद परिव्राजक।

ईश्वर प्राप्ति ओर गुरु
लेखक - पंडित गंगाप्रसाद उपाध्याय
प्रस्तुति - आर्य मिलन

गुरू अनुभवी होना चाहिये जिससे वह शिष्य की कठिनाइयों को दूर कर सके और उसको कठिन बातों का तात्पर्य बता सके । हिन्दुओं में एक प्रथा है । लोग कहा करते हैं कि जब तक हम गुरू नहीं करते उस समय तक हमको स्वर्ग नहीं मिल सकता । इसीलिये वह गुरू मंत्र ले लेते हैं अर्थात् कोई पण्डित या संन्यासी उनके कान में मंत्र फूंक देता है । इसी को गुरू – दीक्षा कहते हैं । परन्तु यह गुरू – दीक्षा वास्तव में गुरू – दीक्षा नहीं हैं किन्तु ढोंग है । जिस पाखण्डी ने स्वयं ईश्वर–प्राप्ति का कोई साधन नहीं किया वह दूसरे को क्या मार्ग बतायेगा । ऐसे ही गुरूओं के विषय में मुण्डकोपनिषत् (१।२।८।६) में आया है

अविद्यायामन्तरे वर्तमानाः स्वयंधीराः पण्डितमन्यमानाः।
जङ्घन्यमानाः परियन्ति मूढ़ा अन्धेनैव नीयमाना यथान्धा।
अविद्यायां बहुधा वर्तमाना वयं कृतार्था इत्यभिमन्यन्ति वालाः
यत् कर्मिणो न प्रवेदयन्ति रागात्तेनातुराः क्षीणलोकाश्च्यवन्ते ॥

अर्थात् अविद्या में फंसे हुये लोग अपने को पण्डित मान कर और यह समझकर कि जो हम कह रहे हैं ठीक है, दूसरों को बहकाते हैं । उनकी वैसी गति होती है जैसी अन्धे के पीछे चलने वाले अंधों की होती है । इनको कभी अच्छी गति प्राप्त नहीं हो सकती।

हम देखते हैं कि जिस प्रकार हिन्दू जाति में आजकल झूठे साधु और संन्यासियों का बहुत आदर है उसी प्रकार ऐसे गुरूओं का भी है । मूर्ख उनको धन देकर गुरू मंत्र ले आते हैं । परन्तु उससे लाभ क्या होता है ? वस्तुत : कुछ भी नहीं । 'लोभी गुरू लालची चेले' की लोकोक्ति लागू होती है । यह गुरू नहीं है किन्तु ठग हैं। इनका आदर करने से जाति को बहुत हानि होती है और शिष्यों की न तो अविद्या दूर होती है न उनकी उन्नति होती है

गुरू वही है जो सच्चा ज्ञान देता है । यह ज्ञान एक क्षण या एक दिन में नहीं दिया जाता । इसके लिये गुरू और शिष्य का बहुत दिनों तक संसर्ग होना चाहिये । अध्ययन जादू की लकड़ी नहीं है कि । 'एक ! दो – तीन !' और आ गई ।

(यह लेख पंडित गंगाप्रसाद उपाध्याय जी की पुस्तक "अस्तिकवाद (अध्याय १२ – ईश्वर की प्राप्ति के साधन)" से लिया गया है, ये पंडित जी की बड़ी उत्तम पुस्तक है । सभी पाठकों को इसका अध्ययन करना चाहिए, मुझे पूर्ण विश्वास है कि "अस्तिकवाद" आपके जीवन में एक नवीन अध्याय जोड़ देगी ।

अकबर की महानता का गुणगान तो कई इतिहासकारों ने किया है लेकिन...

अकबर की ओछी हरकतों का वर्णन बहुत कम इतिहासकारों ने किया है....!
अकबर अपने गंदे इरादों से प्रतिवर्ष दिल्ली में नौरोज़ का मेला आयोजित करवाता था....!
इसमें पुरुषों का प्रवेश निषेध था....!
अकबर इस मेले में महिला की वेष–भूषा में जाता था और जो महिला उसे मंत्र मुग्ध कर देती....
उसे दासियाँ छल कपट से अकबर के सम्मुख ले जाती थी....!
एक दिन नौरोज़ के मेले में महाराणा प्रताप सिंह की भतीजी, छोटे भाई महाराज शक्तिसिंह की पुत्री
मेले की सजावट देखने के लिए आई....!
जिनका नाम बाईसा किरणदेवी था....!
जिनका विवाह बीकानेर के पृथ्वीराज जी से हुआ था!
बाईसा किरणदेवी की सुंदरता को देखकर अकबर अपने आप पर क़ाबू नहीं रख पाया....
और उसने बिना सोचे समझे दासियों के माध्यम से धोखे से ज़नाना महल में बुला लिया....!
जैसे ही अकबर ने बाईसा किरणदेवी को स्पर्श करने की कोशिश की....
किरणदेवी ने कमर से कटार निकाली और अकबर को नीचे पटक कर उसकी छाती पर पैर रखकर
कटार गर्दन पर लगा दी....!
और कहा
नींच....नराधम, तुझे पता नहीं मैं उन महाराणा प्रताप की भतीजी हूँ...
जिनके नाम से तेरी नींद उड़ जाती है....!
बोल तेरी आख़री इच्छा क्या है....?
अकबर का खून सूख गया....!
कभी सोचा नहीं होगा कि सम्राट अकबर आज एक राजपूत बाईसा के चरणों में होगा....!
अकबर बोलाः मुझसे पहचानने में भूल हो गई....
मुझे माफ़ कर दो देवी....!
इस पर किरण देवी ने कहाः
आज के बाद दिल्ली में नौरोज़ का मेला नहीं लगेगा....!
और किसी भी नारी को परेशान नहीं करेगा....!
अकबर ने हाथ जोड़कर कहा आज के बाद कभी मेला नहीं लगेगा....!
उस दिन के बाद कभी मेला नहीं लगा....!
इस घटना का वर्णन
गिरधर आसिया द्वारा रचित सगत रासो में 632 पृष्ठ संख्या पर दिया गया है।
बीकानेर संग्रहालय में लगी एक पेटिंग में भी इस घटना को एक दोहे के माध्यम से बताया गया है!
किरण सिंहणी सी चढ़ी उर पर खींच कटार..!
भीख मांगता प्राण की अकबर हाथ पसार....!!
अकबर की छाती पर पैर रखकर खड़ी वीर बाला किरन का चित्र आज भी जयपुर के संग्रहालय में
सुरक्षित है, यह देखिये :

यज्ञ

यज्ञ का शाब्दिक अर्थ है– देव पूजा, संगतिकरण और दान। देव पूजा अर्थात् अग्निहोत्र के माध्यम से प्रज्वलित अग्नि में घी और सामग्री से आहुति प्रदान करना। इस वैज्ञानिक प्रक्रिया के माध्यम से वातावरण की शुद्धि होती है, जिसके लिए वेदों में बार–बार यज्ञ करने पर बल दिया गया है। इस आधुनिक सभ्य मानव के पास इतना समय नहीं कि वह यज्ञ कर सके। इसीलिए उसने सस्ता और शार्टकट रास्ता ढूंढ लिया है कि अगरबत्तियां जलाकर भगवान को प्रसन्न कर लिया जाए और वातावरण की भी शुद्धि हो जाए।क्या यह विधि उचित है ?

"अगरबत्ती के धुएं से कैंसर का खतरा" चीन के एक शोध में दावा किया गया है कि अगरबत्ती से निकलने वाला धुआँ सिगरेट से भी खतरनाक साबित हो सकता है। अध्ययन के अनुसार सुगन्धित अगरबत्ती के धुएं में म्यूटाजेनिक, जीनोटाक्सिक, साइटोटाक्सिक जैसे विषैले तत्व होते है, जिनसे कैंसर होने का खतरा रहता है। अगरबत्ती के हानिकारक धुएं से शरीर में मौजूद जीन का रूप परिवर्तित हो जाता है। जो कैंसर और फेफड़ों से जुड़ी बीमारियां होने की पहली स्टेज है और जेनेटिक म्यूटेशन से डीएनए में भी परिवर्तन हो सकता है।

आज हर मन्दिर में, दुकान में, घर में पूजा पाठ में, धार्मिक अनुष्ठान में किसी चीज के उदघाटन के अवसर पर बिना किसी झिझक के अगरबत्तीयां सुलगाई जाती है। इसका परित्याग कर के इसके स्थान पर गौधृत का दीपक जला ले तो ज्यादा अच्छा रहेगा। क्योंकि १० ग्राम गौधृत को दीपक में जलाने से अथवा यज्ञ में आहुति डालने से १ टन प्राण वायु उत्पन्न होती है तथा उससे वायु मण्डल में एटोमिक रेडिएशन का प्रभाव कम हो जाता है। "गाय के घी में वैक्सीन एसिड, ब्यूटिक एसिड वीटा कैरोटीन जैसे तत्व पाए जाते हैं जो शरीर में पैदा होने वाले कैंसरीय तत्त्वों से लड़ने की क्षमता रखते है।

यज्ञ (हवन) एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है और ये अगरबत्तीयां जलाना अवैज्ञानिक हानिकारक तरीका है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने यज्ञ करने पर बल दिया है न कि अगरबत्ती सुलगाने पर।वे सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में लिखते हैं– प्रत्येक मनुष्य को सोलह–सोलह आहुति और छः–छः ग्राम माशे धृतादि एक–एक आहुति का परिमाण न्यून से न्यून चाहिए और जो इससे अधिक करें तो बहुत अच्छा है।घी में ही वह सामर्थ्य है जो दुर्गन्धित वायु को बाहर निकाल सकती हैं।कैंसरकारक सस्ते नुस्खे न अपना कर यज्ञ की ओर लौटने से ही कल्याण होगा। यह ऋषियों का दिया हुआ बहुत बड़ा विज्ञान है।

शास्त्रार्थों के मनोरंजक क्षण।
'ईश्वर ने वेद ज्ञान बिना बोले कैसे दिया ?'
(सत्यव्रत सिद्धांतालंकार)

बहुत पुरानी बात लिखने बैठा हूँ। होगी ७५ (वर्तमान में लगभग १००) साल पहले की बात।तब शास्त्रार्थों का युग था। मैं गुरुकुल में पढ़ता था। परिवार के किसी संकट में घर बुलाया गया था। घर लुधियाना के एक गाँव में था। दशहरे के दिन थे। मैं गाँव से लुधियाना शहर आया हुआ था। जैसे दिल्ली में रामलीला ग्राउंड है, जहां लम्बे चौड़े आयोजन होते हैं, वैसे लुधियाना में दरेसी नामक मैदान था, जहां उत्सवों में लोग इकट्ठे हुआ करते थे। अब वहां क्या है – यह मुझे मालूम नहीं।

कौतूहलवश मैं भी दरेसी चला गया। वहां देखा–जमघट लगा हुआ था। एक मौलाना आर्यसमाज के विरुद्ध टीका टिप्पणी तथा लेक्चरबाजी कर रहे थे। मैं भी उस जमघट में शामिल हो गया। मौलाना साहब कह रहे थे – "ये आर्यसमाजी कहते हैं कि 'वेद ईश्वरीय ज्ञान है। 'अगर वेद ईश्वरीय ज्ञान है तो इनसे पूछो कि जब ईश्वर शरीर धारण नहीं करता, जैसा कि ये मानते हैं, तो बिना बोले उसने ज्ञान कैसे दिया ? उस मजमे में सब तरह के लोग थे – मुसलमान भी थे, हिन्दू आर्यसमाजी भी थे, परन्तु मौलाना की आवाज अपनी युक्ति को बेमिसाल समझने के कारण क्षण–क्षण ऊंची होती जाती थी। उनका मुद्दा सिर्फ एक था – जब खुदा जिस्म अख्तियार नहीं करता जैसा आर्यसमाजी कहते हैं कि नहीं करता, तब बिना बोले वह वेद का ज्ञान कैसे दे सकता था ?

कुछ देर तो मैं खड़ा–खड़ा सुनता रहा, परन्तु मुझसे देर तक चुप नहीं रहा गया। मैं भीड़ को चीरता हुआ कुछ आगे बढ़ गया। मौलाना को ललकारते हुए मैंने कहा – "मौलाना साहब ! मैं आपके सवाल का जवाब दूंगा।"

मौलाना बोले – "तुम कल के छोकरे, परे हट जाओ ! तुम्हारे आर्यसमाजी आका यहाँ बहुत खड़े हैं, उनको मेरे सवाल का जवाब देने दो।"

वहां जो आर्यसमाजी खड़े थे वे मुझे जानते न थे। एक ने मेरे पास आकर कान में कहा, "बच्चा, तुम कौन हो ? आर्यसमाज की फजीहत न करा देना ! इतना – भर कह दो कि आर्यसमाज मंदिर में आकर शास्त्रार्थ कर लें।"

मैंने आर्य भाई की बात को अनसुना कर दिया और मौलाना को सावधान करते हुए कहा – "मैं गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार का एक छात्र हूँ। मगर तुम्हारे हर सवाल का जवाब दूंगा।"

गुरुकुल कांगड़ी का नाम सुनते ही उपस्थित आर्यसमाजियों का उत्साह बढ़ गया और उन्होंने ताली बजानी शुरू कर दी।

मैंने मौलाना को सम्बोधित करते हुए पूछा – "मैं पहले आपसे कितनी दूर खड़ा था ?"

बोले – कोई १०० गज दूर।

फिर पूछा – "अब मैं कहाँ खड़ा हूँ ?"

बोले – कोइ ५० गज दूर।"

इसके बाद २५–३० गज मैं आगे बढ़ता गया, और पूछा – "अब मैं कहाँ आ गया ?"
बोले – मेरे नजदीक।"
उसके बाद मैं एकदम उसके पास गया और पूछा – "अब मैं कहाँ हूँ ?"

बोले क्या बेहूदगी का सवाल करते हो ? तुम्हारा मेरे इतने नजदीक आने का और मेरे सवाल का क्या यह हल है ?"

मैंने कहा – "यही तो हल है ! मैं जब बहुत दूर खड़ा था, तब आप चिल्ला–चिल्लाकर बोलते थे। जितना मैं नजदीक आता गया, आपकी आवाज धीमी होती गयी। अगर मैं आपके भीतर पहुँच जाऊं तो आवाज की कोई जरूरत ही नहीं रहेगी। ईश्वर हर जगह मौजूद है। बाहर भी है, भीतर भी है। वह मेरे अन्दर भी है, आपके अन्दर भी। वह हमारे इतना भीतर है कि उसे बोलने की आवश्यकता नहीं है। इसका मतलब यह हुआ कि जितनी दूरी कम होती जाएगी, 'मैटर' तो उतना ही रहेगा, किन्तु आवाज की जरूरत उतनी ही कम हो जाएगी। यहाँ तक कि दूरी जब जीरो हो जाएगी, तब आवाज भी जीरो हो जाएगी। यही तुम्हारे सवाल का जवाब है। यही वेदों के अवतरण का तरीका है।" मौलाना चुप हो गए तथा दरेसी मैदान में जुटी भीड़ ने तालियों की गड़गड़ाहट करदी, जो कि मेरे तर्क की मजबूती की प्रतीक थी।

स्रोत – बिखरे मोती।

सम्पादक – डॉ. भवानी लाल भारतीय।

॥ ओ३म् ॥

रिश्ते सर्वजातीय रिश्ते

सर्व ब्राह्मण, सर्व राजपूत (क्षत्रिय), सर्व वैश्य, अग्रवाल माहेश्वरी, जैन सिक्ख, बौद्ध, गुजराती, महाराष्ट्रीयन पंजाबी, सिंधी, मारवाड़ी, बंगाली, मराठा, यादव, कायस्थ, सोनी, वर्मा, सेन एवं समस्त पिछड़ी जाति, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति (OBC, SC, ST) आदि के (समस्त हिन्दू समाज के) युवक - युवतियाँ अविवाहित, विधवा / विधुर, तलाकशुदा प्रौढ़, विकलांग (अस्थिबाधित, दृष्टिबाधित, मूकबधिर आदि) वैवाहिक रिश्तों हेतु संपर्क कर, परस्पर स्व - स्व (अपने - अपने) गुण, कर्म, स्वभाव का उत्तम चयन कर, दिव्य वैदिक श्रेष्ठतम जीवन को प्राप्त करें।

समस्त हिन्दू समाज के अविवाहित, विधवा / विधुर, तलाकशुदा, विकलांग आदि वैवाहिक संबंधों हेतु बायोडाटा - फोटो भेज कर शीघ्र संपर्क करें।

संपर्क : आर्य समाज मंदिर 219, संचार नगर एक्सटेंशन, कनाड़िया रोड़, इन्दौर (म.प्र.) 452016, मो. 9977957777, 9977987777

www.vedicparinay.com | E-mail: aryasamajindore@yahoo.com

एक बार एक कवि हलवाई की दुकान पहुंचे, जलेबी और दही ली और वहीं खाने बैठ गये।

इतने में एक कौआ कहीं से आया और दही की परात में चोंच मारकर उड़ चला। हलवाई को बड़ा गुस्सा आया उसने पत्थर उठाया और कौए को दे मारा। कौए की किस्मत ख़राब, पत्थर सीधे उसे लगा और वो मर गया।

- ये घटना देख कवी हृदय जगा । वो जलेबी खाने के बाद पानी पीने पहुंचे तो उन्होने एक कोयले के टुकड़े से वहां एक पंक्ति लिख दी।
  "काग दही पर जान गँवायो"
- तभी वहां एक लेखपाल महोदय जो कागजों में हेराफेरी की वजह से निलम्बित हो गये थे, पानी पीने आए। कवि की लिखी पंक्तियों पर जब उनकी नजर पड़ी तो अनायास ही उनके मुंह से निकल पड़ा , कितनी सही बात लिखी है! क्योंकि उन्होने उसे कुछ इस तरह पढ़ा–
  "कागद ही पर जान गंवायो"
- तभी एक मजनू टाइप लड़का पिटा–पिटाया सा वहां पानी पीने आया। उसे भी लगा कितनी सच्ची बात लिखी है काश उसे ये पहले पता होती, क्योंकि उसने उसे कुछ यूं पढ़ा था–
  "का गदही पर जान गंवायो"

शायद इसीलिए तुलसीदास जी ने बहुत पहले ही लिख दिया था,
"जाकी रही भावना जैसी प्रभु मूरत देखी तिन तैसी"

॥ ओ३म् ॥

गृह प्रवेश, वास्तु यज्ञ, गायत्री यज्ञ, नाम करण संस्कार, मुण्डन संस्कार, विवाह आदि संस्कारों के लिये संपर्क करें।

आर्य समाज विधि (वैदिक - पद्धति) से प्रमाण - पत्र सहित सजातीय / अंतर्जातीय विवाह - संस्कार करने हेतु मिलें

वैदिक पद्धति से अंत्येष्टि संस्कार निःशुल्क किये जाते है।

आर्य समाज संचार नगर, इन्दौर (म.प्र.) 452016

कार्यालय : आर्य समाज – 219, संचार नगर एक्स, इन्दौर (म.प्र.) 452016

ई-मेल : aryasamajindore@yahoo.com, वेबसाइट : www.vedicparinaya.com

www.indorearyasamaj.com www.aryasamj.co ✆ 9977 95 7777, 9977 98 7777 ☎ 0731-6066067

नोट – यज्ञ (हवन) से संबंधित हवन पात्र, हवन कुण्ड, हवन सामग्री, हवन समिधा (लकड़िया) एवं वैदिक साहित्य भी उपलब्ध है।

"वैदिक धर्म को यदि बचाना है तो अपने मन से सभी प्रकार के भेदभाव को दूर करना होगा"

महाभारत काल के बाद से वेद और वैदिक धर्म का निरन्तर पतन देखने को मिल रहा है। ऋषि दयानन्द के जीवन में ऐसा भी समय आया जब वेद प्रायः–लुप्त हो गये थे। महाभारत काल के बाद वेदों के सत्य अर्थों का देश व समाज में प्रचार रहा हो, इसका प्रमाणित विवरण प्राप्त नहीं होता। वेदों के लुप्त होने का कारण क्या था? इसका कारण यही था वेदों के विद्वानों ने अपने कर्तव्यों की उपेक्षा कर लोगों को वेदाध्ययन कराना बन्द कर दिया था। यदि देश में वेदों के ऋषि, योगी व विद्वान होते और वह अपने जीवन का मुख्य कर्तव्य वेदों की सत्य शिक्षाओं के प्रचार को ही बनाते, तो वेद विलुप्त न होते और ऐसा होने पर देश और समाज में मिथ्या अन्धविश्वास, यज्ञों में पशु हिंसा, यम व नियमों का जीवन में त्याग, सामाजिक भेदभाव व अन्य अन्धविश्वास व पाखण्ड भी उत्पन्न न होते। बताया जाता है कि महाभारत के लगभग 2000–2500 वर्ष बाद देश में यज्ञों में पशु हत्या, अश्व, गाय, बकरी व भेड़ आदि के मांस से यज्ञों में आहुतियां दी जाने लगी थी। इसका कारण वेदों के शब्दों के अर्थों में भ्रान्तियों का होना मुख्य था जिसका कारण तत्कालीन याज्ञिकों का अज्ञान था। उस समय भी देश में बड़े बड़े कुछ व्याकरणाचार्य तो रहे ही होंगे परन्तु उन लोगों ने वेदों के अर्थों का अनर्थ करने वालों को समझाया नहीं और न ही शास्त्रार्थ की चुनौती दी।

यह भी हो सकता है कि यज्ञों में पशु हिंसा करने वाले लोग जानते हुए भी अनजान बन रहे हों और उनके पास सच्चे विद्वानों से अधिक शक्ति रही हो। जो भी रहा हो यज्ञों में पशु हिंसा होती थी जिससे बौद्ध मत का प्रादुर्भाव हुआ। बौद्ध मत के आविर्भाव के कारण बहुत से लोगों ने यज्ञों को करना छोड़ दिया और महात्मा बुद्ध के अनुयायी बन गये। महात्मा बुद्ध की मृत्यु के बाद धीरे धीरे उनकी मूर्ति की पूजा आरम्भ हुई। जैन मत ने भी मूर्ति पूजा को स्वीकार किया और दोनों मत अपने आद्य आचार्यों, महात्मा बुद्ध व महावीर स्वामी, की मूर्तियों की पूजा अर्चना करने लगे। समय के साथ इनका विस्तार होता गया। कुछ काल बाद सनातन वैदिक मत का प्रभाव कम होने लगा। ऐसे समय में स्वामी शंकराचार्य जी का देश में आगमन हुआ जिन्होंने जैन व बौद्ध मत के ईश्वर के अस्तित्व को न मानने की मान्यता का खण्डन किया। उन्होंने शास्त्रार्थ में उनके ईश्वर को न मानने की मान्यता का खण्डन कर उन्हें पराजित किया। इससे देश में वेदान्त दर्शन, उपनिषद व गीता आदि ग्रन्थों में वर्णित स्वामी शंकराचार्य जी की अद्वैत विचारधारा के अनुरुप ईश्वर के स्वरूप का प्रचार हुआ। इसका परिणाम यह हुआ कि देश में वेद और वैदिक मत की मान्यताओं का कुछ–कुछ प्रचार व प्रसार हुआ। हानि यह हुई कि सब लोग स्वयं को ईश्वर का अंश व साक्षात् ईश्वर ही मानने लगे। स्वामी शंकराचार्य जी का जीवन अति अल्प जीवन था। उनके विरोधियों ने उन्हें विष देकर अल्पायु में ही उन्हें मार डाला। उनकी मृत्यु हो जाने के बाद बौद्ध व जैन मत पुनः क्रियाशील हो उठे और वैदिक धर्मानुयायियों में पुनः अन्धविश्वासों व सामाजिक बुराईयों का बढ़ना आरम्भ हो गया। इस प्रकार देश अन्धविश्वास, पाखण्ड व समाजिक कुरीतियों से त्रस्त होकर पाषाण मूर्तिपूजा,

फलित ज्योतिष, अवतारवाद आदि से बने अविद्या के जंजाल में फंस गया। इन सामाजिक बुराईयों में एक बुराई जन्मना जातिवाद भी है। इस जन्मना जातिवाद में मनुष्यों को एक समान न मानकर छोटा–बड़ा अथवा ऊंचा व नीचा माना जाता है।

सामाजिक भेदभाव मध्य युग की देन है जब भारत सहित सारा विश्व अज्ञान में भरा हुआ था। इस काल में देश विदेश में जो भी मत उत्पन्न हुए उन सबका अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि सभी मतों में अज्ञान व अन्ध–विश्वास भरे हुए हैं। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के ग्यारहवें से चैदहवें समुल्लास में विश्व के प्रमुख मत–मतान्तरों की अविद्या को उन्हीं ग्रन्थों के उदाहरण देकर सिद्ध किया है। अविद्या से यदि कोई धार्मिक ग्रन्थ मुक्त है तो वह केवल ईश्वरीय ज्ञान वेद व ऋषि मुनियों के बनाये दर्शन, उपनिषद आदि ग्रन्थ ही हैं। मध्यकाल में जो अविद्यायुक्त आचार्य हुए उन्होंने अपने अपने अविद्यायुक्त मतों को प्रचारित करने के लिए मनुस्मृति, रामायण, महाभारत व ब्राह्मण आदि ग्रन्थों में भी अविद्यायुक्त कथनों को मिलाकर उनसे प्रक्षिप्त किया है। विवेक बुद्धि से इन्हें हटाया जा सकता है। ऐसा ही एक प्रयास आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, दिल्ली के संस्थापक महात्मा दीपचन्द आर्य, पं. राजवीर शास्त्री और डा. सुरेन्द्र कुमार जी के प्रयत्नों से हुआ था। इन्होंने मनुस्मृति के प्रमुख व अधिकांश सिद्धान्त विरुद्ध, प्रसंग विरुद्ध व वेद विरुद्ध कथनों वा मान्यताओं को मनुस्मृति से सप्रमाण पृथक किया है। भेदभाव केवल हमारे सनातनी पौराणिक मत में होता है ऐसी बात नहीं है अपितु यह तो सभी वेदेतर मतों में, कुछ में कम और कुछ में हमसे भी अधिक विद्यमान है। सब मतों की ईश्वरोपासना की विधियां पृथक–पृथक है। हम जानते हैं कि ईश्वर एक है। उसका सत्य स्वरूप वही है जो वेदों वा ऋषिकृत वैदिक साहित्य में वर्णित है। ईश्वर की प्राप्ति की विधि उसके सत्य गुणों को जानकर स्तुति, प्रार्थना, उपासना आदि करने से होती है। उपासना में ही ईश्वर के गुणों का ध्यान व उसके अनुसार अपने गुण–कर्म–स्वभाव का सुधार करना अनिवार्य होता है। योगदर्शनकार ऋषि पतंजलि ने ईश्वर की उपासना के लिए ही योगदर्शन का प्रणयन वा निर्माण किया। सौभाग्य से यह ग्रन्थ सुरक्षित व अनेक भाष्यकारों की टीकाओं के साथ उपलब्ध है। यह योग दर्शन किसी मत विशेष के लिए नहीं अपितु संसार के सभी मनुष्यों के लिए लिखा गया है। देखने में आता है कि सभी मतों के आचार्य व उनके अनुयायी दूसरे मतों के आचार्यों के कथनों को संशय की दृष्टि से देखते हैं, अतः वह कभी सत्य मत, निर्भ्रान्त ज्ञान व ईश्वर को प्राप्त नहीं हो सकते। इसके लिए यह आवश्यक है कि पहले सत्यमत को निश्चित किया जाये। इसके लिए वेद, ऋषिकृत वैदिक साहित्य सहित ऋषि दयानन्द के सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, वेदभाष्य आदि ग्रन्थ सहायक हैं। जिन लोगों ने इन ग्रन्थों का आश्रय लिया है वह सत्य मत व सत्य ज्ञान को प्राप्त हो जाते हैं और धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को अपने–अपने ज्ञान व कर्मों के अनुसार प्राप्त करते हैं वा उसके निकट पहुंचते हैं।

आज का युग विज्ञान का युग है। विज्ञान मत–मतान्तरों की मिथ्या बातों को नहीं मानता। विज्ञान का कार्य सृष्टि में कार्यरत ईश्वर के बनायें नियमों की खोज करना व उनका सदुपयोग कर उपकार लेना है। यही कार्य हमारे ऋषि और विद्वान भी करते रहे हैं। विज्ञान की एक विडम्बना यह है कि वह आंखों से दिखाई न देने के कारण ईश्वर व आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता। यह एक

प्रकार का अज्ञान व दंभ है। विज्ञान आज तक शरीर में आत्मा होने पर भी आत्मा को नहीं जान सका। यह संसार किससे बनता व किसके द्वारा चलाया जा रहा है, इसका उत्तर भी विज्ञान के पास नहीं है। इस सृष्टि की आने वाले वर्षों में भले ही वह लगभग दो अरब वर्ष बाद हो, प्रलय होगी। उस आगामी सृष्टि की प्रलय की अवस्था के बाद कौन सृष्टि की रचना करेगा एवं वर्तमान सृष्टि बनने से पूर्व की प्रलय अवस्था के बाद किस शक्ति व सत्ता द्वारा सृष्टि की रचना की गई, इन प्रश्नों का यथार्थ उत्तर वैज्ञानिकों के पास नहीं है। इसका उत्तर हमारे वेदों व वैदिक दर्शनों में तर्क, विवेचना व दृष्टान्तों को प्रस्तुत कर दिया गया है जो यथार्थ व बुद्धिसंगत एवं तर्क से सिद्ध है। अस्तु। अतः विज्ञान में जिस प्रकार से तर्क के आश्रय से सत्य सिद्धान्तों को स्थिर किया जाता है, उसी प्रकार तर्क के आश्रय से भेदभाव को समझने व उन्हें दूर करने का प्रयास किया जाना चाहिये।

हम देखते हैं कि संसार में सभी मनुष्य शरीर व समान इन्द्रिय वाले हैं। सबके शरीरों की बनावट, आकृति आदि में अधिकांशतः समानता है और सबके पास समान रूप से पांच ज्ञानेन्द्रिय, पांच कर्मेन्द्रिय, मन, बुद्धि, चित्त व अहंकार आदि हैं। भौगोलिक कारणों व माता–पिता आदि के शरीरों के समान ही सन्तानों के शरीर व उनकी त्वचा आदि का रंग होता है। देश में सबको समान रूप से शिक्षा के अवसर न मिलने के कारण सभी लोगों को समान रूप से बौद्धिक व आत्मिक ज्ञान प्राप्त नहीं हो पाता। यदि सबको एक समान सुविधायें मिले तो हमें लगता है कि श्रमिक व निर्धन परिवारों के लोग, जिनके साथ आजकर भेदभाव का व्यवहार किया जाता है, वह धनी व उच्च जाति के लोगों से कहीं अधिक आगे जा सकते हैं। मनुष्य मनुष्य में जाति, रंग–रूप, धन–सम्पति, देश व स्थान आदि के आधार पर भेदभाव करना अमानवीय एवं मनुष्यता के विरुद्ध है। वेदों एवं प्रामाणिक वैदिक शास्त्रों में जन्म के आधार पर व अन्यथा मनुष्य–मनुष्य में परस्पर किसी प्रकार के भेदभाव का किंचित उल्लेख नहीं है। वेद मनुष्यों की एक ही जाति स्वीकार करते हैं जिसे मनुष्य जाति कहते हैं। मनुष्य के गुण, कर्म व स्वभावों में अन्तर के कारण वेद में अच्छे गुणों व कर्मों वालों को आर्य व इसके विपरीत बुरे गुणों व स्वभाव वालों को दस्यु कहा गया है। जन्म, जाति, निर्धनता तथा रंग–रूप आदि के कारण जो भेदभाव किया जाता है वह धार्मिक पाप है। भेदभाव करने वाले ऐसे लोग आर्य व मनुष्य नहीं अपितु दस्यु श्रेणी के लोग हैं परन्तु समाज अज्ञानता व स्वार्थ आदि के कारण ऐसा नहीं मानता। यह आधुनिक युग का एक बहुत बड़ा आश्चर्य है।

आज हमारा देश व समाज जन्मना जाति के आधार पर असंगठित व टूट सा रहा है। विदेशी मत–मतान्तर के लोग भारतीय मतों के लोगों को धर्मान्तरित कर व अधिक सन्तानों को जन्म देकर अपनी संख्या बढ़ा रहे हैं। इसके साथ ही वह गरीब, निर्धन, दलितों व शोषितों को मनोवैज्ञानिक रूप से प्रलोभन देकर उन्हें अपने ही परिवारों व बन्धुओं से दूर कर रहे हैं। वह अनेक विवाह करते हैं, दिखावी प्रेम कर हमारे धर्म व संस्कृति की अपरिपक्व कन्याओं को फंसाकर उन्हें विवाह का नाटक कर अपनी जनसंख्या को बढ़ाने का काम करते हैं। देश व समाज के कानून ऐसे लोगों को उचित सजा नहीं दे पाते। अतः आर्य हिन्दू वैदिक बन्धुओं को अपने धर्म की रक्षा के लिए आज के संक्रमण काल में अपने धार्मिक विचारों व मान्यताओं में समयानुरूप व वेद की शिक्षाओं के आधार पर उचित परिवर्तन करना होगा। संसार के सभी

लक्ष्य

लक्ष्य विहीन न तो कार्य ही ठीक है और न ही मानव जीवन। कार्य तो बहुत से हैं लेकिन जीवन एक ही है, पता नहीं फिर यह कभी मिलेगा कि नहीं। इस जन्म के पूर्व हम क्या थे, मरने के पश्चात् किस योनि में कहाँ जाएंगे ? यह प्रश्न न तो कोई हल कर सका है और न कोई हल कर सकेगा। शायद कोई योगी साधक अपने पूर्व जन्मों के विषय में जाना हो।हाँ इतना तो व्यक्ति अवश्य जानता है कि जैसा हम कर्म करेंगें वैसा हमें फल भोगने को मिलेगा। जो हमारे शुभ कर्म हैं या यह कह सकते हैं कि कुछ ऐसे कर्म भी होते हैं जो समय के सीने पर एक गहरी लकीर खींचकर लोगों को अमर बना देते हैं। ऐसा वही करते हैं जिनके सामने लोक कल्याणकारी लक्ष्य होते हैं,जिसको वे अनेकों बाधाओं के पश्चात् भी पूरा करके ही दम लेते हैं।लक्ष्य पूरा करने के लिए जब तक मन में भाव नहीं उत्पन्न होंगें, अदम्य उत्साह के साथ उसके लिए आगे नहीं बढ़ेंगे, आने वाली बाधाओं से घबड़ाएंगे नहीं तब तक लक्ष्य पूरा करना कोरी कल्पना है।

लक्ष्य के मार्ग में वे ही बाधा बनते हैं जिससे उनका स्वार्थ टकराता है या उस लक्ष्य के आगे उनके किए गए कार्य उन्हें बौना सिद्ध करते हैं या उनकी मान्यता के विरुद्ध कोई कार्य हो रहा हो। बाधा उत्पन्न करने वाला व्यक्ति किस हद तक नुकसान करेगा, कहा नहीं जा सकता है। कुछ को तो लक्ष्य पूरा करने में प्राण तक भी गँवानी पड़ी। ऐसे में एक उदाहरण महर्षि स्वामी दयानंद सरस्वती भी हैं जिन्हें वेदों का प्रचार प्रसार करने और वैदिक मान्यताओं को सिद्ध करने तथा उसके विरुद्ध हो रहे कार्यों के प्रति आवाज़ उठाने में अनेकों बार ज़हर पीने पड़े और अन्त में काँच युक्त दूध में ज़हर पीने के कारण इस दुनिया से जाना पड़ा।

वह व्यक्ति भले ही इस दुनिया से चला गया परन्तु वेदों वाला ऋषि बनकर गया। इतिहास इस बात का साक्षी है कि उसने अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए अथक प्रयास किया, अनेक लोगों से सम्पर्क किया, स्थान स्थान पर उसे शास्त्रार्थ करना पड़ा, बहुत जिल्लत झेलनी पड़ी। जैसे अर्जुन पेड़, शाखाओं और पत्तों को न देखकर केवल चिड़िया की आँख देखा उसी तरह दयानंद विभिन्न धर्म ग्रंथ रहते हुए भी मुख्य रूप से केवल वेदों को देखा क्योंकि उसी वेद से उसे सब कुछ मिला, उसी को आधार मानकर उन्होंने राष्ट्र में स्वराज्य का डंका पीटा, इसके लिए उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश में भी राजा के कर्तव्य को दर्शाया और विदेशी शासकों का घोर विरोध किया, युवकों में राष्ट्रप्रेम का अलख जगाया,यही कारण था कि आर्य समाज आज़ादी के दीवानों का केन्द्र रहा है, जातिवाद का भी उन्होंने घोर विरोध किया, विभिन्न पूजा पद्धति को नकारते हुए निराकार परब्रह्म की उपासना करने को कहा, सबको वेद पढ़ने–पढ़ाने और सुनने सुनाने का अधिकार है,इसे उन्होंने स्वयं वेदों से सिद्ध किया। अंधविश्वासों और कुरीतियों का जमकर विरोध किया, इसके लिए उन्हें काफ़ी संघर्षों का सामना करना पड़ा। उनके मृत्यु के पश्चात् कुछ लोगों ने उनके मिशन को आगे बढ़ाने का अथक प्रयास किया, ऐसा करने पर श्रद्धानंद, लेखराम, लाला लाजपत राय सरीखे व्यक्तियों को भी जान तक गँवानी पड़ी और वे इतिहास के विषय बन गये। आप जब एक लक्ष्य लेकर चलेंगें स्वतः उसके साथ बहुत से लक्ष्य जुट जाएंगे जैसा कि स्वामी दयानंद वेदों

की ओर लौटो लेकर चले उसी के साथ बहुत से लक्ष्य बन गए। अर्जुन ने मछली के आँख में क्या तीर मारा, उसके साथ उन्हें द्रोपदी मिली, पांचाल नरेश से सम्बन्ध बने, कौरवों के विरुद्ध लड़ने के लिए एक प्रबल शक्तिशाली राज्य मिला, पांचाल नरेश के मित्र राजा भी मिले। एक लक्ष्य बनाकर चलिए, "एक साधे सब सधे सब साधे सब जाय" की कहावत को चरितार्थ कीजिए। कुछ एक ऐसे भी हुए जो कि स्वामी जी के मन्तव्यों को आगे बढ़ाने का वीणा उठाए उन्हें सम्मान भी मिला, वे एक लक्ष्य से भटककर और भी लक्ष्य बना लिए, सम्मान के अहंकार में वे अपने लक्ष्य से भटककर एक अपना नया मत तक चलाकर अपने को स्वयं लोगों का मसीहा बन बैठे। इनका जब भी इतिहास लिखा जाएगा उसके साथ आर्य समाज या ऋषि दयानंद का नाम अवश्य जुड़ेगा, व्यक्ति जब इन पर गहन चिन्तन करेगा तो पायेगा कि स्वार्थ में ऐसे लोग भटककर ग़लत दिशा पकड़ लिए। आश्चर्य की बात है कि जिस व्यक्ति पूजा का स्वामी जी ने विरोध किया उसी व्यक्तिपूजा के वे समर्थक बन गये, अपने को भगवान सिद्ध कर बैठे। वर्तमान में भी कुछ ऐसे लोग हैं जो आर्य समाज में आए उसका प्रचार, प्रसार करने में जुटे, उन्हें अतिशय सम्मान मिला, सम्मान और सम्पत्ति की भूख ने उन्हें ऐसा बना दिया कि वे लक्ष्य से भटक गये और स्वामी जी के मन्तव्यों में ही परिवर्तन का मन बना लिए, यहाँ तक कि उनकी अमर पुस्तक "सत्यार्थ प्रकाश" में ही काट छाँट करने की बात करने लगे। ऐसे अधम लोग ही किसी समाज के घातक होते हैं। अब तो यज्ञ में भी लोग अनेक मंत्रों को जोड़ने लगे हैं, जिन मन्त्रों से यज्ञ करना स्वामी जी ने कहीं लिखा ही नहीं है। ऐसे लोगों को ऋषि के लक्ष्य को पूरा करने वाला कहें या झूठे सम्मान में ऋषि के पद्धति को संशोधित करने वाले घातक शत्रु। आज हम इन्हीं महत्वाकांक्षा में आर्य समाज को कई भागों में बाँटकर रख दिये हैं। आपसी प्रतिद्वंदिता ने हमें अपने लक्ष्य से पीछे ढकेल दिया जिसके कारण हम उन्नति के जगह अवनति की ओर जा रहे हैं। हम जहाँ रहें एक अच्छे लक्ष्य को लेकर चलें अपने अहंकार को भूलकर चलें। सबको साथ लेकर चलें। अगर हम ऐसा न कर सम्मान और सम्पत्ति के झूठे अहंकार में जीना चाहते हैं तो आप दयानंद स्वामी के शत्रु हैं क्योंकि उन्होंने दोनों को जीवन में स्थान ही नहीं दिया।

आज सम्पत्ति इकट्ठा करने की होड़ लगी हुई है। वह जीवन का लक्ष्य बन गया है, जो धन जीवन निर्वाह का साधन था वह साध्य बन गया। वेद भी कहता है "शत हस्त समाहर" अर्थात् सैकड़ों हाथ से कमाओ लेकिन उसके आगे कहता है "सहस्त्र हस्त संकिरः" अर्थात् हज़ारों हाथ से दान करो। लेकिन दान की प्रवृत्ति से हम दूर भाग रहे हैं। दूसरे के धन को पाने के लिए गिद्ध दृष्टि लगाए हुए हैं जबकि यजुर्वेद कहता है "मा गृधः कस्य स्विद्धनम्" अर्थात् किसी के धन की लालसा मत करो। जो चीज़ हमारे जीवन के सफ़र में साथ जाने वाला नहीं है, बाधक है, उसे हम जीवन का लक्ष्य क्यों बनाएं। क्यों इसके आगे मूल लक्ष्य मोक्ष से मुँह मोंड़े। मोक्ष का अभिलाषी जो उसके लिए सतत प्रयत्नशील रहता है, वही लक्ष्य का वास्तविक अर्थ समझकर धन और सम्मान की अभिलाषा किए बिना समाज और परमात्मा दोनों का प्रिय होता है, जो जीवन का मूल उद्देश्य है,लक्ष्य है उसको चरितार्थ करता है।

अरुण कुमार आर्य
प्रधान– आर्य समाज मन्दिर
मुग़ल सराय, चन्दौली ।

काश हर मां की हो ऐसी संतान

खाली पेट
(लघुकथा)

लगभग दस साल का बालक राधा का गेट बजा रहा है।

राधा ने बाहर आकर पूंछा

- "क्या है ?"
- "आंटी जी क्या मैं आपका गार्डन साफ कर दूं ?"
- "नहीं, हमें नहीं करवाना।"

हाथ जोड़ते हुए दयनीय स्वर में "प्लीज आंटी जी करा लीजिये न, अच्छे से साफ करूंगा।"

द्रवित होते हुए "अच्छा ठीक है, कितने पैसा लेगा ?"

- "पैसा नहीं आंटी जी, खाना दे देना।"
- "ओह !! अच्छे से काम करना।"
- "लगता है, बेचारा भूखा है। पहले खाना दे देती हूँ। राधा बुदबुदायी।"
- "ऐ

लड़के ! पहले खाना खा ले, फिर काम करना।

- "नहीं आंटी जी, पहले काम कर लूँ फिर आप खाना दे देना।"
- "ठीक है ! कहकर राधा अपने काम में लग गयी।"

एक घंटे बाद "आंटी जी देख लीजिए, सफाई अच्छे से हुई कि नहीं।"

- "अरे वाह! तूने तो बहुत बढ़िया सफाई की है, गमले भी तरीके से जमा दिए। यहाँ बैठ, मैं खाना लाती हूँ।"

जैसे ही राधा ने उसे खाना दिया वह जेब से पन्नी निकाल कर उसमें खाना रखने लगा।"

- "भूखे काम किया है, अब खाना तो यहीं बैठकर खा ले। जरूरत होगी तो और दे दूंगी।"

"नहीं आंटी, मेरी बीमार माँ घर पर है। सरकारी अस्पताल से दवा तो मिल गयी है,पर डॉ साहब ने कहा है दवा खाली पेट नहीं खाना है।"

राधा रो पड़ी..

और अपने हाथों से मासुम को उसकी दूसरी माँ बनकर खाना खिलाया..

फिर... उसकी माँ के लिए रोटियां बनाई .. और साथ उसके घर जाकर उसकी माँ को रोटियां दे आयी .

और कह आयी.. बहन आप बहुत अमीर हो ..

जो दौलत आपने अपने बेटे को दी है वो हम अपने बच्चो को भी नहीं दे पाते ..

खुद्दारी की ...

निशा बिटिया

निशा काम निपटा कर बैठी ही थी की फोन की घंटी बजने लगी। मेरठ से विमला चाची का फोन था, "बिटिया अपने बाबू जी को आकर ले जाओ यहां से। बीमार रहने लगे है, बहुत कमजोर हो गए हैं। हम भी कोई जवान तो हो नहीं रहें है, अब उनका करना बहुत मुश्किल होता जा रहा है। वैसे भी आखिरी समय अपने बच्चों के साथ ही बिताना चाहिए।"

निशा बोली, "ठीक है चाची जी इस रविवार को आतें हैं, बाबू जी को हम दिल्ली ले आएंगे।" फिर इधर उधर की बातें करके फोन काट दिया।

बाबूजी तीन भाई है, पुश्तैनी मकान है तीनों वहीं रहते हैं। निशा और उसका छोटा भाई विवेक दिल्ली में रहते हैं अपने अपने परिवार के साथ। तीन चार साल पहले विवेक को फ्लैट खरीदने की लिए पैसे की आवश्यकता पड़ी तो बाबूजी ने भाईयों से मकान के अपने एक तिहाई हिस्से का पैसा लेकर विवेक को दे दिया था, कुछ खाने पहनने के लिए अपने लायक रखकर। दिल्ली आना नहीं चाहते थे इसलिए एक छोटा सा कमरा रख लिया था जब तक जीवित थे तब तक के लिए। निशा को लगता था कि अम्मा के जाने के बाद बिल्कुल अकेले पड़ गए होंगे बाबूजी , लेकिन वहां पुराने परिचितों के बीच उनका मन लगता था। दोनों चाचियां भी ध्यान रखती थी। दिल्ली में दोनों भाई बहन की गृहस्थी भी मजे से चल रही थी।

रविवार को निशा और विवेक का ही कार्यक्रम बन पाया मेरठ जाने का। निशा के पति अमित एक व्यस्त डाक्टर है, महीने की लाखों की कमाई है उनका इस तरह से छुट्टी लेकर निकलना बहुत मुश्किल है, मरीजों की बीमारी न रविवार देखती है न सोमवार। विवेक की पत्नी रेनू की अपनी जिंदगी है उच्च वर्गीय परिवारों में उठना बैठना है उसका, इस तरह के छोटे मोटे पारिवारिक पचड़ों में पड़ना उसे पसंद नहीं।

रास्ते भर निशा को लगा विवेक कुछ अनमना , गुमसुम सा बैठा है। वह बोली, "इतना परेशान मत हो, ऐसी कोई चिंता की बात नहीं है, उम्र हो रही है, थोड़े कमजोर हो गए हैं ठीक हो जाएंगे।"

विवेक झींकते हुए बोला, "अच्छा खासा चल रहा था,पता नहीं चाचाजी को ये ऐ.सी. क्या मुसीबत आ गई दो चार साल और रख लेते तो। अब तो मकानों के दाम आसमान छू रहे हैं,तब कितने कम पैसों में अपने नाम करवा लिया तीसरा हिस्सा।"

निशा शान्त करने की मन्शा से बोली, "ठीक है न उस समय जितने भाव थे बाजार में उस हिसाब से दे दिए। और बाबूजी आखरी समय अपने बच्चों के बीच बिताएंगे तो उन्हें अच्छा लगेगा।"

विवेक उत्तेजित हो गया, बोला, "दीदी तेरे लिए यह सब कहना बहुत आसान है। तीन कमरों के फ्लैट में कहां रखूंगा उन्हें। रेनू से किट किट रहेगी सो अलग, उसने तो साफ मना कर दिया है वह बाबूजी का कोई काम नहीं करेंगी । वैसे तो दीदी लड़कियां हक मांग ने तो बडी जल्दी खड़ी हो जाती हैं, करने के नाम पर क्यों पीछे हट जाती है। आज कल लड़कियों की शिक्षा और शादी के समय में अच्छा

खासा खर्च हो जाता है। तू क्यों नहीं ले जाती बाबूजी को अपने घर, इतनी बड़ी कोठी है, जिजाजी की लाखों की कमाई है ?"

निशा को विवेक का इस तरह बोलना ठीक नहीं लगा। पैसे लेते हुए कैसे वादा कर रहा था बाबूजी से, "आपको किसी भी वस्तु की आवश्यकता हो आप निसंकोच फोन कर देना मैं तुरंत लेकर आ जाऊंगा। बस इस समय हाथ थोड़ा तंग है।" नाममात्र पैसे छोड़े थे बाबूजी के पास, और फिर कभी फटका भी नहीं उनकी सुध लेने।

निशाः" तू चिंता मत कर मैं ले जाऊंगी बाबूजी को अपने घर।" सही है उसे क्या परेशानी, इतना बड़ा घर फिर पति रात दिन मरीजों की सेवा करते है, एक पिता तुल्य ससुर को आश्रय तो दे ही सकते हैं।

बाबूजी को देख कर उसकी आंखें भर आईं। इतने दुबले और बेबस दिख रहे थे, गले लगते हुए बोली, "पहले फोन करवा देते पहले लेने आ जाती।" बाबूजी बोलें," तुम्हारी अपनी जिंदगी है क्या परेशान करता। वैसे भी दिल्ली में बिल्कुल तुम लोगों पर आश्रित हो जाऊंगा।"

रात को डाक्टर साहब बहुत देर से आएं, तब तक पिता और बच्चे सो चुके थे। खाना खाने के बाद सुकून से बैठते हुएं निशा ने डाक्टर साहब से कहा," बाबूजी को मैं यहां ले आईं हूं। विवेक का घर बहुत छोटा है, उसे उन्हें रखने में थोड़ी परेशानी होती।" अमित के एक दम तेवर बदल गए, वह सख्त लहजे में बोला," यहां ले आईं हूं से क्या मतलब है तुम्हारा ? तुम्हारे पिताजी तुम्हारे भाई की जिम्मेदारी है। मैंने बड़ा घर वृद्धाश्रम खोलने के लिए नहीं लिया था, अपने रहने के लिए लिया है। जायदाद के पैसे हड़पते हुए नहीं सोचा था साले साहब ने कि पिता की करनी भी पड़ेगी। रात दिन मेहनत करके पैसा कमाता हूं फालतू लुटाने के लिए नहीं है मेरे पास।"

पति के इस रूप से अनभिज्ञ थी निशा। "रात दिन मरीजों की सेवा करते हो मेरे पिता के लिए क्या आपके घर और दिल में इतना सा स्थान भी नहीं है।"

अमित के चेहरे की नसें तनीं हुईं थीं,वह लगभग चीखते हुए बोला," मरीज बीमार पड़ता है पैसे देता है ठीक होने के लिए, मैं इलाज करता हूं पैसे लेता हूं। यह व्यापारिक समझौता है इसमें सेवा जैसा कुछ नहीं है।यह मेरा काम है मेरी रोजी–रोटी है। बेहतर होगा तुम एक दो दिन में अपने पिता को विवेक के घर छोड़ आओ।"

निशा को अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था। जिस पति की वह इतनी इज्जत करती है वें ऐसा बोल सकते हैं। क्यों उसने अपने भाई और पति पर इतना विश्वास किया? क्यों उसने शुरू से ही एक एक पैसा का हिसाब नहीं रखा? अच्छी खासी नौकरी करती थी , पहले पुत्र के जन्म पर अमित ने यह कह कर छुड़वा दी कि मैं इतना कमाता हूं तुम्हें नौकरी करने की क्या आवश्यकता है। तुम्हें किसी चीज की कमी नहीं रहेगी आराम से घर रहकर बच्चों की देखभाल करो।

आज अगर नौकरी कर रही होती तो अलग से कुछ पैसे होते उसके पास या दस साल से घर में सारा दिन काम करने के बदले में पैसे की मांग करती तो इतने तो हो ही जाते की पिता जी की देखभाल अपने दम पर कर पाती। कहने को तो हर महीने बैंक में उसके नाम के खाते में पैसे जमा होते हैं लेकिन

उन्हें खर्च करने की बिना पूछे उसे इजाजत नहीं थी। भाई से भी मन कर रहा था कह दे शादी में जो खर्च हुआ था वह निकाल कर जो बचता है उसका आधा आधा कर दे। कम से कम पिता इज्जत से तो जी पाएंगे। पति और भाई दोनों को पंक्ति में खड़ा कर के बहुत से सवाल करने का मन कर रहा था, जानती थी जवाब कुछ न कुछ तो अवश्य होंगे। लेकिन इन सवाल जवाब में रिश्तों की परतें दर परतें उखड़ जाएंगी और जो नग्नता सामने आएगी उसके बाद रिश्ते ढोने मुश्किल हो जाएंगे। सामने तस्वीर में से झांकती दो जोड़ी आंखें जिव्हा पर ताला डाल रहीं थीं।

अगले दिन अमित के हस्पताल जाने के बाद जब नाश्ता लेकर निशा बाबूजी के पास पहुंची तो वे समान बांधे बैठें थे। उदासी भरे स्वर में बोले," मेरे कारण अपनी गृहस्थी मत खराब कर। पता नहीं कितने दिन है मेरे पास कितने नहीं। मैंने इस वृद्धाश्रम में बात कर ली है जितने पैसे मेरे पास है, उसमें मुझे वे लोग रखने को तैयार है। ये ले पता तू मुझे वहां छोड़ आ, और निश्चित होकर अपनी गृहस्थी सम्भाल।"

निशा समझ गई बाबूजी की देह कमजोर हो गई है दिमाग नहीं। दमाद काम पर जाने से पहले मिलने भी नहीं आया साफ बात है ससुर का आना उसे अच्छा नहीं लगा। क्या सफाई देती चुप चाप टैक्सी बुलाकर उनके दिए पते पर उन्हें छोड़ने चल दी। नजरें नहीं मिला पा रही थी, न कुछ बोलते बन रहा था। बाबूजी ने ही उसका हाथ दबाते हुए कहा," परेशान मत हो बिटिया, परिस्थितियों पर कब हमारा बस चलता है। मैं यहां अपने हम उम्र लोगों के बीच खुश रहूंगा।"

तीन दिन हो गए थे बाबूजी को वृद्धाश्रम छोड़कर आए हुए। निशा का न किसी से बोलने का मन कर रहा था न कुछ खाने का। फोन करके पूछने की भी हिम्मत नहीं हो रही थी वे कैसे हैं? इतनी ग्लानि हो रही थी कि किस मुंह से पूछे। वृद्धाश्रम से ही फोन आ गया कि बाबूजी अब इस दुनिया में नहीं रहे।दस बजे थे बच्चे पिकनिक पर गए थे आठ नौ बजे तक आएंगे, अमित तो आतें ही दस बजे तक है। किसी की भी दिनचर्या पर कोई असर नहीं पड़ेगा, किसी को सूचना भी क्या देना। विवेक आफिस चला गया होगा बेकार छुट्टी लेनी पड़ेगी।

रास्ते भर अविरल अश्रु धारा बहती रही कहना मुश्किल था पिता के जाने के गम में या अपनी बेबसी पर आखिरी समय पर पिता के लिए कुछ नहीं कर पायी। तीन दिन केवल तीन दिन अमित ने उसके पिता को मान और आश्रय दे दिया होता तो वह हृदय से अमित को परमेश्वर का मान लेती।

वृद्धाश्रम के सन्चालक महोदय के साथ मिलकर उसने औपचारिकताएं पूर्ण की। वह बोल रहे थे," इनके बहू, बेटा और दामाद भी है रिकॉर्ड के हिसाब से। उनको भी सूचना दे देते तो अच्छा रहता। वह कुछ सम्भल चुकी थी बोली, नहीं इनका कोई नहीं है न बहू न बेटा और न दामाद। बस एक बेटी है वह भी नाम के लिए।"

संचालक महोदय अपनी ही धुन में बोल रहे थे," परिवार वालों को सांत्वना और बाबूजी की आत्मा को शांति मिले।"

निशा सोच रही थी' बाबूजी की आत्मा को शांति मिल ही गई होगी। जाने से पहले सबसे मोह भंग हो गया था। समझ गये होंगे कोई किसी का नहीं होता, फिर क्यों आत्मा अशान्त होगी।'

"हां, परमात्मा उसको इतनी शक्ति दें कि किसी तरह वह बहन और पत्नी का रिश्ता निभा सकें ।"

बच्चों को स्मरण करवाने योग्य वाक्य

(क) ईश्वर के गुण –

१. सच्चिदानंदस्वरुप, २. निराकार, ३. सर्वशक्तिमान, ४. न्यायकारी, ५. दयालु, ६. अजन्मा, ७. अनन्त ।

ईश्वर का मुख्य नाम ओ३म् है

(नोटः– बडे बच्चों को कुछ अन्य गुणवाचक नाम भी स्मरण करवाये जा सकते हैं– ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र, सृष्टि–कर्ता, सृष्टिहर्ता और मोक्ष दाता है। ब्रह्मा, विष्णु, शिव, गणेश, महादेव, विराट, अग्नि, विश्व, हिरण्यगर्भ, वायु, तैजस, ईश्वर, आदित्य, प्राज्ञ, परम पुरुष, मनु, प्रजापति, इन्द्र, प्राण, ब्रह्म, रूद्र, कालाग्नि, दिव्य, सुपर्ण, गुरुत्मान्, मातरिश्वा, भूमि, आदि सब उसी एक ही ईश्वर के नाम हैं)

(ख) ईश्वर के कार्य –

१. ईश्वर सृष्टि की रचना करते हैं।
२. ईश्वर सृष्टि का पालन करते हैं।
३. ईश्वर सृष्टि का संहार करते हैं
४. ईश्वर वेदों का ज्ञान देते हैं।
५. ईश्वर अच्छे–बुरे कर्मों का फल देते हैं।
६. ईश्वर योगियों को मोक्ष प्रदान करते हैं ।

(ग) ईश्वर के उपदेश –

१. वेद पढो, वेद पढ़ाओ ।
२. सन्ध्या करो, हवन करो ।
३. चित्र नहीं चरित्र की पूजा करो ।
४. सदा सच बोलो, मीठा बोलो ।
५. झूठ बोलना पाप है ।
६. मांस अंडा खाना पाप है ।

(घ) ईश्वर से हमारा सम्बन्ध–

१. ईश्वर हमारी माता है हम उसके पुत्र हैं।
२. ईश्वर हमारा पिता है हम उसके पुत्र हैं।
३. ईश्वर हमारा गुरू है हम उसके शिष्य हैं।
४. ईश्वर हमारा राजा है हम उसकी प्रजा हैं।
५. ईश्वर उपास्य है हम उसके उपासक हैं।
६. ईश्वर व्यापक है हम व्याप्य हैं।

(ङ) ईश्वर से प्रार्थना –

१. हे ईश्वर ! हमें सद्‌बुद्धि दो।
२. हे ईश्वर हमारे सब दुरूख दुर्गुण दूर कर दो।
३. हे ईश्वर ! हमें सब बन्धनों से मुक्त कर दो।
४. हे ईश्वर ! सब सुखी हों, सबका मंगल हो।
५. हे ईश्वर ! सब ओर शान्ति ही शान्ति हो।
६. ओ३म् असतो मा सदगमय
तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृत्योर्मा अमृतंगमय

(च) साधारण ज्ञान–

१. अनादि वस्तुएं – ईश्वर, जीव और प्रकृति (God , Soul, Matter)
२. सृष्टि काल– चार अरब बतीस करोड़ वर्ष।
३. प्रलय काल– चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष।
४. मोक्ष काल–
३१ नील, १० खरब, ४० अरब वर्ष।
५. हमारे देश का मूल नाम–आर्यावर्त्त
६. अनादि का अर्थ–नित्य, शाश्वत (Eternal)
७. वेद संस्कृत में ही क्यों– क्योंकि संस्कृत को सीखने के लिये सबको एक जैसी मेहनत करनी पडती है और यह सबसे समृद्ध व वैज्ञानिक दैवी भाषा है।

माता पिता और गुरू जन अपने बच्चों को उपरोक्त वाक्य स्मरण करवाएं, बहुत अच्छे संस्कार पडेंगे ।

डॉ. मुमुक्षु आर्य, हृदय रोग विशेषज्ञ

॥ ओ३म् ॥

वेद ज्ञान, वेदों में वर्णित विषय जैसे ध्यान, योग,
ईश्वर, आत्मा, पुनर्जन्म, मृत्यु, कर्मफल, वर्ण - आश्रम व्यवस्था आदि।
वैदिक साहित्य अनुसंधानात्मक विषय, आध्यात्मिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय विचारों
से ओत - प्रोत ''वैदिक राष्ट्र - मासिक पत्रिका प्रतिमाह प्राप्त करें।

''वैदिक राष्ट्र'' मासिक पत्रिका

वार्षिक सदस्यता
केवल रु. 300/-

संपर्क: संपादक- वैदिक राष्ट्र - मासिक पत्रिका

संपर्क: आर्य समाज मंदिर - 219, संचार नगर, इन्दौर (म.प्र.) 452016
मोबाइल : 9977987777, वॉट्सअप नं. 9977967777

नोट: ड्राफ्ट / चैक / मनीऑर्डर **''वैदिक राष्ट्र''** के नाम से 'वैदिक राष्ट्र' कार्यालय - 219, संचार नगर एक्स., कनाड़िया रोड़, इन्दौर (म.प्र.) 452016 अथवा बैंक ऑफ महाराष्ट्र - शाखा: कनाड़िया रोड़, इन्दौर में सीधे खाता क्रं. 6003657384, IFSC Code : MAH0001396 में जमा कराएं।

॥ ओ३म् ॥

यज्ञो वै विष्णु :
स्वर्ग कामो यजेत्
यज्ञों वै श्रेष्ठतमं कर्म
अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि

दैनिक यज्ञ : ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ (हवन)
साप्ताहिक यज्ञ : सत्संग (रविवार)
वैदिक दिव्य यज्ञ सत्संग (प्रत्येक माह अंतिम रविवार)
पारिवारिक यज्ञ सत्संग (परिवारों में नि:शुल्क यज्ञ सत्संग)

* 16 संस्कारों-यज्ञों कों करवाएं *

पुंसवन संस्कार, सीमतोन्नयन संस्कार, जातकर्म संस्कार, नामकरण संस्कार, निष्क्रमण संस्कार, अन्नप्राशन संस्कार, चूडाकर्म संस्कार (मुण्डन), कर्णविध संस्कार, उपनयन संस्कार (जनेऊ), समावर्तन संस्कार, विवाह संस्कार एवं अत्येंष्टि आदि सभी 16 संस्कारों हेतु सम्पर्क करें।

वैदिक विधि से सादगीपूर्ण विवाह-संस्कार भी कराए जाते हैं।

* विशेष अवसरो पर यज्ञ (हवन) करवाएं *

जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, गृह प्रवेश, गृह शांति, शांति यज्ञ, वास्तु यज्ञ, गायत्री यज्ञ, श्रीयज्ञ, सरस्वती यज्ञ, संजीवन यज्ञ, मेधा यज्ञ, वाणिज्य यज्ञ, महामृत्युंजय यज्ञ, पुण्यतिथि यज्ञ, उठावना (चौथा), चतुर्वेद शतक यज्ञ एवं वेद प्रवचन, गीता-प्रवन, उपनिषद्-कथा आदि सुअवसरों पर आचार्यो को आमंत्रित कर लाभ प्राप्त करेंगे।

आर्य समाज मंदिर 219, संचार नगर एक्स., कनाड़िया रोड़, इन्दौर - 452016
aryasamajindore@yahoo.com | www.aryasamaj.co | vedicparinay@gmail.com
Mob: 9977-98-7777, 9977-95-7777, Ph: 0731-606 606 7

नोट : यज्ञ (हवन) से संबंधित हवन पात्र, हवन कुण्ड, हवन सामग्री, हवन समिधा (लकड़िया) एवं वैदिक साहित्य भी उपलब्ध है।

॥ ओ३म् ॥

25वाँ सर्वजातीय परिचय सम्मेलन

(अविवाहित, विधवा/विधुर, तलाकशुदा, प्रौढ़, दिव्यांग आदि)

दिनांक - 30 दिसम्बर 2018 (रविवार)

"सर्वजातीय परिणय स्मारिका" में अविवाहित, विधवा/विधुर, तलाकशुदा, प्रौढ़, दिव्यांग आदि बॉयोडाटा-फोटो प्रकाशनार्थ
9977957777 एवं E-mail: aryasamajindore@yahoo.com हेतु भेजें।

युवकों के लिये रु. 1100/- शुल्क जिसमें "सर्वजातीय परिणय स्मारिका" में बॉयोडाटा-फोटा प्रकाशित होगा एवं "सर्वजातीय परिणय स्मारिका" भी दी जायेगी।

युवतियों का रजिस्ट्रेशन नि:शुल्क किन्तु "सर्वजातीय परिणय स्मारिका" रु. 600/- में प्राप्त कर सकते है।

निम्नलिखित बैंकों में शुल्क जमा कर रसीद की जानकारी अवश्य देवें।

9977987777, 9977957777

बैंक का नाम	-	बैंक ऑफ महाराष्ट्र	बैंक का नाम	-	भारतीय स्टेट बैंक
खाता नाम	-	वैदिक राष्ट्र	खाता नाम	-	भानु प्रताप
खाता क्रमांक	-	60036357384	खाता क्रमांक	-	53001335422
IFSC Code	-	MAHB0001396	IFSC Code	-	SBIN0030412

आयोजक

आर्य समाज संचार नगर, इन्दौर (म.प्र.) 452016

युवा निर्माण ॥ ओ३म् ॥ राष्ट्र निर्माण

युवक-युवतियों के चरित्र निर्माण शिविरों हेतु संपर्क करें

विशेष प्रशिक्षण आसान, प्राणयाम, लाठी, भाला, चाकू, नानचक, जूड़ो कराटे, बाक्सिंग, मल्लखम, रस्सी मल्लखम, स्तूप, आत्मरक्षार्थ, सैनिक शिक्षा, वैदिक संस्कार आदि सिखने हेतु संपर्क करें।

कार्यालय

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् म.प्र.

आर्य समाज - 219, संचार नगर एक्स, इन्दौर (म.प्र.) 452016

ई-मेल : aryasamajindore@yahoo.com, वेबसाइट : www.vedicparinaya.com

www.indorearyasamaj.com www.aryasamj.co 9977 95 7777, 9977 98 7777 ☎ 0731-6066067

कार्यालय : आर्य समाज - 219, संचार नगर एक्स, इन्दौर (म.प्र.) 452016

ई-मेल : aryasamajindore@yahoo.com | www.indorearyasamaj.com